श्री संत गाडगे बाबा हिंदी महाविद्यालय , भुसावल
डॉ .पूनम त्रिवेदी
हिंदी विभाग

Papers Published in Journal
2021-2022

Sr.no	Name of Author	First Author or Second	Title of Paper	ISSN No.	Impact Factor Name and Marks	Publisher	National/International	Whether UGC Approved YES/NO	Whether Peer Reviewed Yes/No	Month and Year of publication	Issue/Volume
1	डॉ. पूनम त्रिवेदी		उदय प्रकाश की कहानिया में भूमंडलीयकरन का प्रभाव	E-issn-2582-5429	SJIF 5.675	अक्षय पब्लिकेशन भुसावल जिला-जलगाव	अंतर्राष्ट्रीय	नहीं		जनवरी-मार्च -2022	
2020-2021											
1	डॉ. पूनम त्रिवेदी	Chronical of Humanities & Cultural Studies (CHCS)	हिंदी उपन्यासो में किन्नर विमर्श	2454-5503	F-4.197(IIJIF)	Chronical of Humanities & Cultural Studies (CHCS) A-102,Sangali Regency Kalyan (w)	अंतर्राष्ट्रीय	नहीं	हा	जून-2020	Special Issue -3 Volume -06
2019-2020											
1	डॉ. पूनम त्रिवेदी		रही मासूम रजा के उपन्यासों में व्यक्त नारी विमर्श	2348-7143(ISSUE) 214 (B)	6.625	अंतर्राष्ट्रीय शोधपत्रिका रिसर्च जर्नी	अंतर्राष्ट्रीय	हा		जनवरी -2020	
2			प्रेमचंद के उपन्यासों में व्यक्त गोधिवादी चिंतन	2348-7143 ISSUE-224 (C)	6.625	अंतर्राष्ट्रीय शोधपत्रिका रिसर्च जर्नी	अंतर्राष्ट्रीय	हा		4 फरवरी-2022	
3			विजन' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श	2348-7143 Special Issue -232	6.625	अंतर्राष्ट्रीय शोधपत्रिका रिसर्च जर्नी	अंतर्राष्ट्रीय	हा		15 फरवरी-2022	
2018-2019											
1	डॉ पूनम त्रिवेदी		स्वतंत्र संग्राम में कस्तूरबा की भूमिका	2348-7143	SIJF-6.261 Special Issue-72 D-97.99	रिसर्च जर्नी इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिन्सी ई-रिसर्च जरनल				ओक्टुबर -2018	
2			देवेन्द्र मद्रिवाल अफ्सो की गजलो में यथार्वादी चिंतन	ISSUE-29 VOL -1 ISSN -2319-9318	5.131	आतंर विद्याशाखिव बहुभाविक विद्यावर्ती				दिसंबर-2018	
3			लिंग भेद्रिय पुन्स् वादी विमर्श	ISSN NO.-2348-7143	(SJIF)-6.261 (CIF)-3.452 (2015) (GIF)-0.676 (2013)	रिसर्च जर्नी अंतर्राष्ट्रीय ई-पत्रिका	अंतर्राष्ट्रीय	हा		मार्च -2019	Issue -173

श्री संत गाडगे बाबा हिंदी महाविद्यालय , भुसावल
डॉ .पूनम त्रिवेदी
हिंदी विभाग

Books/ Chapter in Books Published
2022-2023

Sr. no	Name of Author	First Author or Sec	Title of Book	Chapter in Book	ISBN No.	Impact Factor Name and Marks	Publisher	National/International	Whether UGC Approved YES/NO	Whether Peer Reviewed Yes/No	Month and Year Of Publication	Issue/Volume
1	डॉ. पूनम त्रिवेदी	प्रथम संस्करण	उतरशती के हिंदी उपन्यासों में नारी विमश		978-93-92576-14-0		गोकुलधाम रेसीडेंसी , प्रेरणानगर , भुसावल , महाराष्ट्र	राष्ट्रीय			नवंबर-2022	
2		डॉ. मनोज पांडे	स्वतंत्रता संघर्ष में हिंदी साहित्य का अवदान	नागार्जुन के उपन्यासों में स्वाधीनता संग्राम की अनुगूँज	973-93-94165-2-6		ए. आर . पब्लिशिंग .को पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटर के-३७ अजित विहार दिल्ली -110084	राष्ट्रीय			फरवरी -2023	

उतरशती के हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श

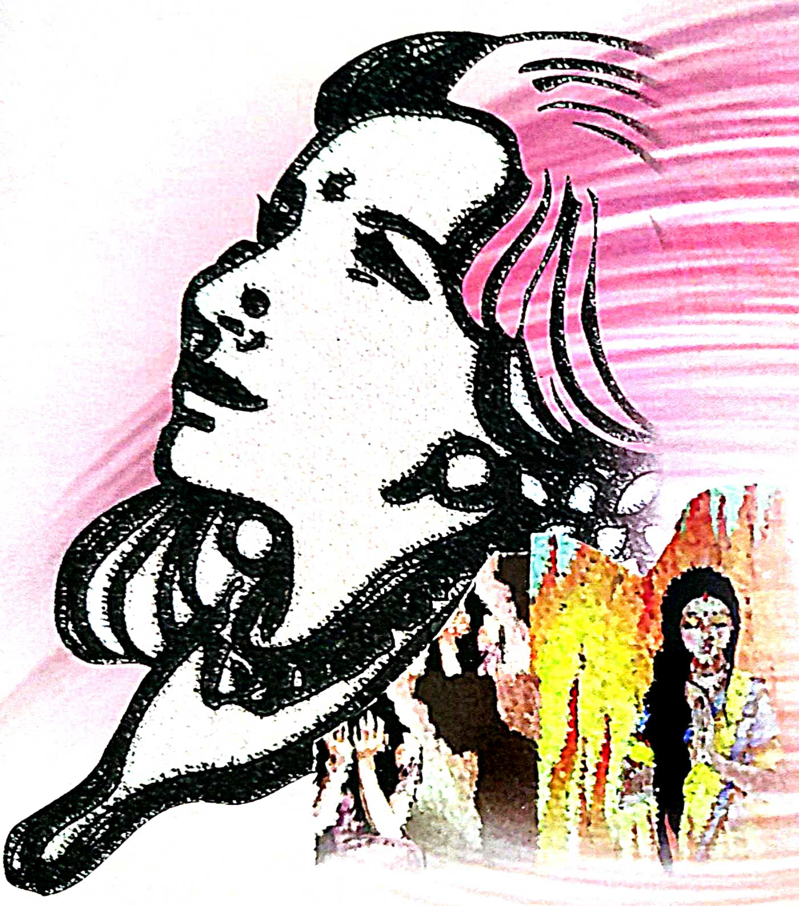

डॉ. पूनम त्रिवेदी

© लेखिका

ISBN :- 978-93-92576-14-0

पुस्तक :- उत्तरशती के हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श
लेखिका :- डॉ. पूनम त्रिवेदी

प्रकाशन :- प्लॉट क्र. 42 गोकुळधाम रेसिडेन्सी, प्रेरणानगर,
वांजोला रोड, भुसावल, जि. जलगाँव
(महाराष्ट्र) 425201
मो.क्र. :- 9421682612
www.aimrj.com
Email- akshrapublication@gmail.com
संस्करण :- प्रथम नवबंर , 2022
मुद्रक :- अक्षरा प्रिंटर्स, भुसावल
मूल्य :- 250 /-

Uttar Sathi Ke Hindi Upanyaso Main
Shree Vimarsha

By : **Dr. Poonam Trivedi**
Price : 250 /-

डॉ. पूनम त्रिवेदी

जन्म - हिलसा, जिला. नालंदा (बिहार)

शिक्षा -
- आरंभिक शिक्षा आर्य कन्या विद्यालय (पटना)
- स्नातक कला (विशेष प्रावीण्य) मगध वि. वि. बोधगया, बिहार
- स्नातकोतर हिन्दी- प्रथम श्रेणी पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (महाराष्ट्र)
- 'राज्यस्तरीय व्याख्याता पात्रता परीक्षा (SET) उत्तीर्ण
- कवियत्री बहिणाबाई उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय जलगाँव से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त।

लेखन : कहानी, कविता, लोकसाहित्य, आँचलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं धार्मिक, साहित्य में विशेष रुचि एवं अध्ययन तथा इनके साहित्य सृजन और समीक्षा से सम्बद्ध इनके लेखन जारी| साथ ही विविध पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आलेख प्रकाशित।

पुस्तक प्रकाशन : राही मासूम रज़ा का साहित्य संवेदना और शिल्प, विद्या प्रकाशन, कानपुर
राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक मधुकरराव चौधरी, रोली प्रकाशन, कानपुर

सदस्य --
- महाराष्ट्र हिन्दी परिषद में रा.तु.म. नागपुर वि.वि. विभागीय सचिव के रूप में कार्य सम्पन्न
- उत्तर महाराष्ट्र हिन्दी प्राध्यापक परिषद के आजीवन सदस्या
- डॉ. राही मासूम रज़ा साहित्य अकादमी लखनऊ की सदस्यता

सम्प्रति – सहायक प्राध्यापिका, स्नातक हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री संत गाडगे बाबा हिन्दी महाविद्यालय भुसावल, जि. जलगाँव (महाराष्ट्र) 425201

चलभाष- 8793670547

अनुप्रेष - drpoonamerived@gmail.com

• available on... amazon.com

ISBN 978-93-92576-14-0

9 789392 576140 >

₹ 250/-

अक्षरा पब्लिकेशन

प्लॉट क्र. 42 गोकुळधाम रेसिडेन्सी, प्रेरणानगर, वांजोला रोड,
भुसावल जि. जलगाँव महाराष्ट्र - 425201

स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी साहित्य का अवदान

सम्पादक

डॉ. मनोज पाण्डेय

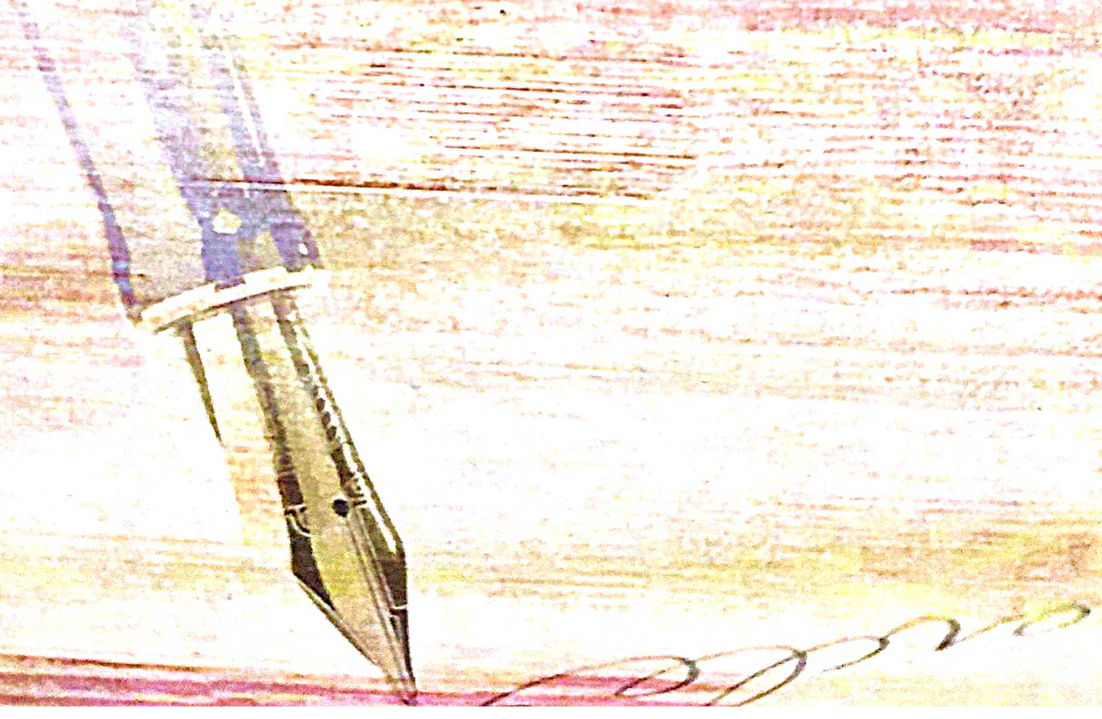

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
फोन : + 91 9968084132, 7982062594
arpublishingco11@gmail.com

SWATANTRATA SANGHARSH ME HINDI SAHITYA KA AWDAAN
Edited by Dr. Manoj Pandey

ISBN : 978-93-94165-23-6
Criticism

© सम्पादक

संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 695

ले-आउट : शेष प्रकाश शुक्ल
मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक व सम्पादक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

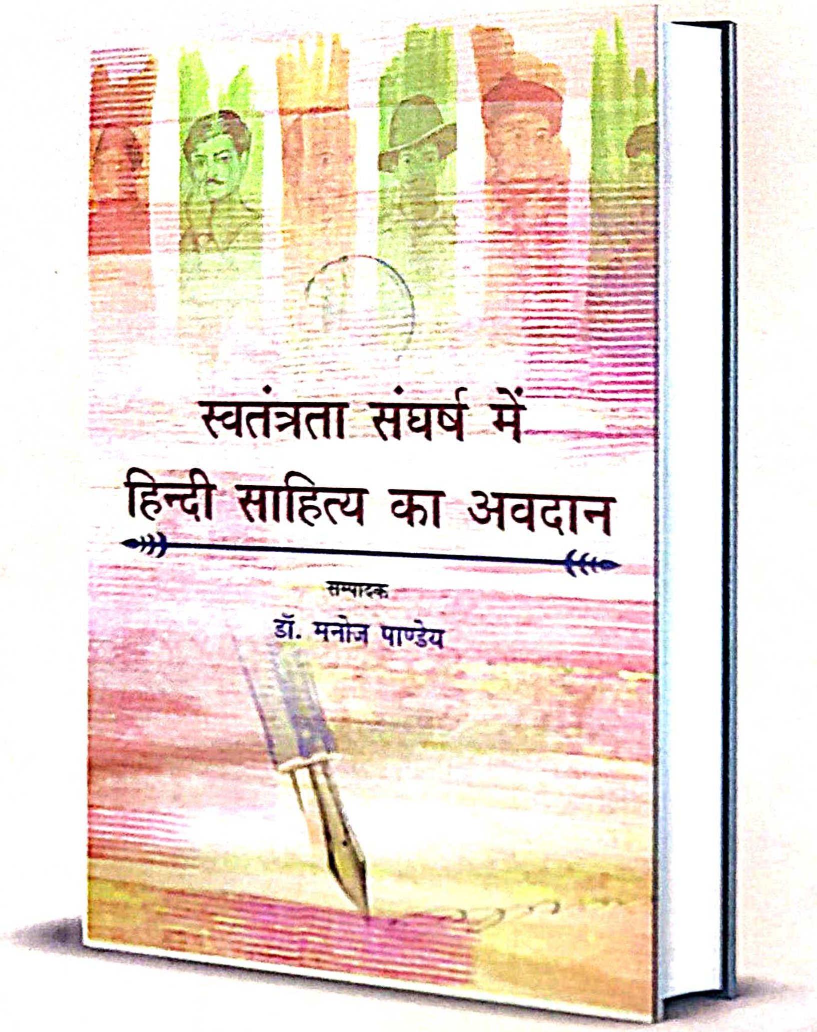
स्वतंत्रता संघर्ष में
हिन्दी साहित्य का अवदान
सम्पादक
डॉ. मनोज पाण्डेय

A. R. PUBLISHING CO.
Publishers & Distributors
K-37, Ajit Vihar, Delhi-110084,
Mob. 9968084132, 7982062594
e-mail: arpublishingco11@gmail.com

ISBN 978-93-94165-23-6
9 789394 165236

SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January - March 2022 Volume 03 Issue III

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli,** AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January-March 2022

Volume 3 Issue III

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.54

Scientific Journal Impact Factor
TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

Digital Online Identifier-
Database System
An International Digital and Virtual Library

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Index

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No
1	Ghosh's Women in *Sea of Poppies*: A New Perspective	**Dr. Sheweta Magotra**	05
2	Indian Philosophy A Way of Life	**Dr. Sonali Mandar Hajare**	12
3	Indira Awas Yojana (PMAY) : A Review of Literature	**Ms. Pragati Tanwar** **Dr. Manoj Songara**	15
4	Feminism in the Poems of Sarojini Naidu	**Shilpi Sharma**	19
5	"We are all Duffs": A critical Analysis of Fat Shaming in Kody Keplinger's novel *The Duff*	**Disha Sharma**	22
6	Need for elderly housing in India in this modern epoch : A Sociological study	**Lovely** **Dr. Ajit Singh Tomar**	29
7	Environmental Management: Approaches, Aspects and Types	**Dr. Pawar A. D.**	36
8	Worship of Lord *Liṅgarāja* in *Śaivacintāmaṇi*	**Swati Sucharita Pattanaik**	41
9	M-commerce : A new way of Commerce in India	**Mahesh Kishor Bhavsar**	46
10	A Study on challenges of E-commerce in India	**Mr. Saymote Babasaheb Yashvant**	51
11	To Study the Relationship between Socioeconomic Status and Big Five Personality Factors amongst Adolescents	**Dr. Soni R Narwani**	55
12	हिन्दी सिनेमा में गाँधीवादी विचारधारा	**डॉ. मीना**	59
13	एक कण्ठ विषपायी : युद्ध एवं शांति की समस्या पर एक विमर्श	**डॉ. बिन्दु यादव**	63
14	वैश्वीकरण और हिंदी	**डॉ. पार्वती शर्मा चांदला**	65
15	हिन्दी साहित्य में स्त्री-काव्य संकलन की परंपरा	**कपिल कुमार गौतम** **प्रो. चंदा बैन**	67
16	उदय प्रकाश की कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ	**शिल्पा दत्त**	70
17	रवीन्द्रनाथ त्यागी के निबंधों में धार्मिक तथा सांस्कृतिक व्यंग्य	**रिन्कु कुमारी राजभर**	73
18	दिव्यांगता एवं ऑनलाइन शिक्षा : अवसर और चुनौतियाँ	**अनुसुईया साहनी** **डॉ. निधि मिश्रा**	77
19	सांस्कृतिक धरोहर के संवाहक- प्रवासी भारतीय	**पूनम पाधा**	81
20	उदय प्रकाश की कहानियों में भूमंडलीकरण का प्रभाव	**डॉ. पूनम त्रिवेदी**	83
21	'दौड़' उपन्यास में उपभोगवादी संस्कृति	**सिजिल.एस.**	86
22	भारत में महामारी का दंश : नव उदारवादी युग में प्रवासी श्रमिकों की विडंबना तथा सरकारी उपचारों की प्रासंगिकता	**प्रतिमा चौरसिया**	89
23	"महाकवि भास की कलात्मक-सौन्दर्य दृष्टि स्वप्नवासवदत्तम के आलोक में	**डॉ. प्रीती श्रीवास्तव**	93
24	लोक अदालत: न्याय व्यवस्था का आधार	**अंजनी कुमार शर्मा**	99
25	उदय प्रकाश की कहानी 'छप्पन तोले का करधन' में वृद्ध विमर्श"	**डॉ. सुनील अभिमन्यू गायकवाड**	104

Akshara Multidisciplinary Research Journal
E- ISSN 2582-5429
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January-March 2022 Volume 3 Issue III
SJIF Impact- 5.54

20

उदय प्रकाश की कहानियों में भूमंडलीकरण का प्रभाव

प्रा.डॉ. पूनम त्रिवेदी
हिन्दी विभागाध्यक्ष
श्री संत गाडगेबाबा हिंदी महाविद्यालय, भुसावल जिला – जलगाँव (महाराष्ट्र)

सम्प्रति भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण दोनों शब्द अंग्रेजी के ग्लोबलायइजेश शब्द के पर्याय रूप में प्रयुक्त होते है। जिसकी व्याख्या करते हुए हम कह सकते है कि ऐसा कोई भी कार्य अथवा घटना जिसका प्रभाव समस्त विश्व पर पडता है, भूमंडलीकरण कहलाता है। अर्थात यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो विश्व के समस्त राष्ट्रों के मध्य परस्पर संबंध निर्मित करने तथा वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्था विकसित करने के उदेश्य से परस्पर संबंध स्थापित करती है। जिसे हम दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय बाजर की संज्ञा दे सकते है जहाँ रोजमर्रा के जिंदगी के अनुभव वस्तुओं और विचारों का प्रचार-प्रसार चिन्हित होकर दुनिया भर में मानवीकृत किए जा रहे है। अतः स्पष्ट है कि भूमंडलीकरण किसी भी देश के औद्योगिक विकास को तो गति प्रदान करता है, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय स्वार्थों के कारण यह एक जटिल प्रक्रिया का रूप धारण करती जा रही है। जिसके कारण अर्थतंत्र में हमे मजबूती तो मिलती है। लेकिन वही दूसरी ओर हमारी उपसंस्कृति का प्रसार भी करती है।

भारत में भूमंडलीकरण के कारण एक विकसनशील देश के रूप में अपना स्थान बना लिया है किन्तु इस भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय संस्कृति और मूल्यों को विनाश के गर्त मे ढकेलते जा रहे हैं। उदय प्रकाश हिंदी के एक जाने-माने साहित्यकार है। भारतीयता का विचार उनमें कूट-कूट कर भरा है। वे अपने राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति असीम आस्था रखते है। इसलिए भूमंडलीकरण के दौर में हो रहे सांस्कृतिक विघटन के प्रति वे अत्याधिक क्षुब्ध है। जिसका प्रभाव उनकी लेखनी में यत्र तत्र सर्वत्र परिलक्षित होता है। वैश्विकरण के युग में पूँजीपतियों का केवल एकमेश उद्देश होता है किसी भी तरह से पैसा कमाना। इस स्वार्थ पूर्ती के लिए अगर उसके नाम पर आँच भी आये तो स्वार्थी विचार उन्हे रौंद डालता है। इसी तथ्य को उदय प्रकाश 'दिल्ली की दिवार' कहानी में व्यक्त करते हैं। उनका मत हैं – “यह एक अलग प्रकार का भूमंडलीकरण है, जो इतने अदृश्य और गोपनीय तरीके से हो रहा है कि इसके बारे में कोई समाजशास्त्री अभी ज्यादा नहीं जानता। जो जानते है, वे चुप रहते है। आनेवाले समय का इंतजार कर रहे हैं।“[1]

सामाजिक पूँजीपति वर्ग रातोरात अपने देश का कच्चा माल बेचकर धनवान बनते जा रहे है और उन काले धनोंको वे दीवार के पीछे गुफाएँ बनाकर छुपाते है। जब यह धन किसी गरीब के हात लग जाता है तब ये धनवान लोग उसे रास्ते से हटा देते है। भूमंडलीकरण के इस दौर में अर्थ प्रधान हो गया है और इंसान गौण। स्वार्थपूर्ति में लिप्त पूँजीवादी इस कदर अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगा हुआ है कि उसे देश, दुनिया की कोई परवाह नहीं है। यहाँ आदमी बिकाऊ माल की तरह है। परिणामस्वरूप अमीर अधिक अमीर बनता जा रहा है और गरीब गरीबी में पिस्ता ही जा रहा है। उदय प्रकाश की कहानियाँ भूमंडलीकरण के इन षडयंत्रो को जगजाहिर करती है। उनकी कहानियों के पात्रों के बारे में निलय उपाध्याय लिखते है – “हमारे दौर के सबसे महत्वपूर्ण कथाकार हैं – उदयप्रकाश। उनकी कहानियों के नायक को देखकर लगता है जैसे कूरतम समय के शिकार हों और वक्त के बड़े रोलर के नीचे आकर पिस जाने के अलावा उनके पास कोई विकल्प ही नहीं बचा हो।”[2] आज आम आदमी की जिन्दगी बद से बदतर होती जा रही है। वह चाहकर भी ऊपर उठ नही सकता। अगर उठना ही चाहे तो उसकी बात को कोई सुनने के लिए तैयार नहीं होता। उस समय वह निराशा के गर्त में जा गिरता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बदलती दुनिया में उसका कोई अस्तित्व नहीं है। क्षुब्ध साहित्यकार उदयप्रकाश अपनी कहानी 'मैंगोसिल' में व्यथित होकर लिखते है – “यह बीसवी सदी के अंत और इक्कसवी सदी के प्रारंभिक साल थे और मेरा जीवन मेरी हर रचना के साथ किसी गहरे अंधकार में डूबा जा रहा था। दुनिका बहुत तेजी से बदल रही थी। दिल्ली और दूसरी राजधानियाँ उससे भी तेजी से। यहाँ पर जगह अब बस एक ही ध्रुव बचा था। निर्गम, बर्बर, लोलप, अनैतिककता और समृद्धि का ध्रुवा कहीं कोई विकल्प नहीं था। मै अपनी परेशानियाँ दिल्ली के ताकतवर लेखकों – विद्वानों को बताने की कोशिश करता, तो ऐसा लगता जैसे समुद्र की अतल गहराई में रहनेवाला कोई धोंधा ऊपर पृथ्वीपर रहनेवाला आधार दिव्य दोपायों को अपने समुद्री अनुभवों की कोई विचित्र अबूझ विजातीय बल बता रहा हो।”[3]

भूंडलीकरण के आगमन पर आम जन के बीच यह भ्रांति पैदा की गई की अब बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याएँ नहीं रहेगी। परन्तु परिणाम विपरीत होते है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के स्थापित होते ही युवा पीढ़ी का भविष्य अंधकार की गहरी खाई में गिरता चला गया। आम आदमी की स्थिति दयनीय हो गई। इस बात की पृष्टि करते हुए उदय प्रकाश 'हत्या' कहानी के माध्यम से व्यथित

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2020 Special Issue – 224 (C)

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS

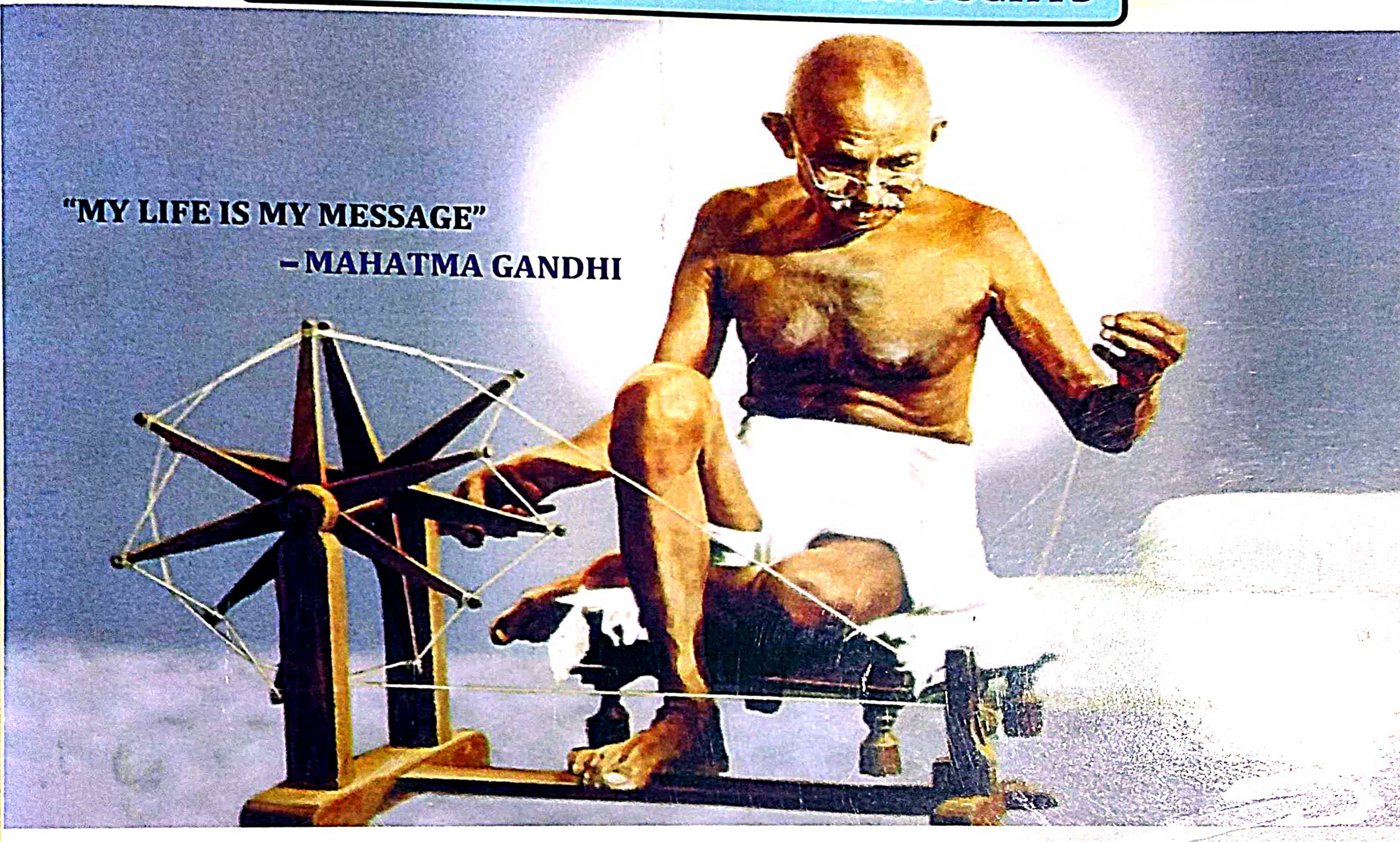

"MY LIFE IS MY MESSAGE"
– MAHATMA GANDHI

Guest Editor :
Dr. Mrs. M. V. Waykole
Principal,
Bhusawal Arts, Science and P.O. Nahata
Commerce College, Bhusawal, Dist Jalgaon.

Executive Editor :
Dr. A. D. Goswami
Vice Principal,
Bhusawal Arts, Science and P.O. Nahata
Commerce College, Bhusawal, Dist Jalgaon.

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar
(Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

pact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February -2020 Special Issue – 224 (C)

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS

Guest Editor
Dr. Mrs. M. V. Waykole
Principal,
Bhusawal Arts, Science and P.O. Nahata
Commerce college, Bhusawal, Dist Jalgaon.

Executive Editor
Dr. A. D. Goswami
Vice Principal,
Bhusawal Arts, Science and P.O. Nahata
Commerce college, Bhusawal, Dist Jalgaon.

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/ लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	आज के संदर्भ में गाँधी चिंतन की उपादेयता	प्राचार्य डॉ. विश्वास पाटील	05
2	आधुनिक कथा साहित्य मे गाँधीवादी विचारधारा	डॉ. तबस्सुम खान	10
3	सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी	डॉ. कमलकिशोर गुप्ता	17
4	महात्मा गाँधी की १५० वी जयंती वर्ष में हिंदी नाटकों में नए गाँधी से साक्षात्कार	डॉ. सुरेश तायडे	20
5	महात्मा गाँधी के राज्य एवं धर्मविषयक विचार	प्राचार्य डॉ. नाना गायकवाड	24
6	आतंकवाद का पर्दाफाश करनेवाली स्वातंत्र्योत्तर गाँधीवादी कविता	डॉ. गौतम कुवर	27
7	महात्मा गाँधी विचारधारा और हिंदी साहित्य	डॉ. मोहम्मद शाकीर शेख	31
8	स्वराज्य की बुनियाद - नयी तालीम	डॉ. शीला भास्कर	34
9	गाँधीजी एवं उनके बहुआयामी चिंतन	डॉ. प्रिया ए.	38
10	हिंदी कविता में गाँधी विचारधारा का धार्मिक परिप्रेक्ष्य	डॉ. राजेश मामरे	40
11	हिंदी उपन्यासोंपर गाँधी विचारधारा का प्रभाव	डॉ. योगेश पाटील	45
12	प्रेमचंद की कहानियों में गाँधी दर्शन	डॉ. कामिनी तिवारी	47
13	जयशंकर प्रसाद रचित 'कामायनी' में गाँधीवादी विचार	डॉ. सुनील पानपाटील	50
14	मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में गाँधीवाद	डॉ. कल्पना पाटील	54
15	प्रेमचंद के उपन्यासों में व्यक्त गाँधी चिंतन	डॉ. पूनम त्रिवेदी	57
16	गाँधीजी के नारी विषयक विचारों की प्रासंगिकता	डॉ. संजीवकुमार शर्मा	60
17	मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में गाँधी विचार	डॉ. अशोक पवार	64
18	गाँधीजी के नजर से राष्ट्रभाषा हिंदी	डॉ. जयश्री गावीत	68
19	कमलेश बख्शी की कहानियों में गाँधी विचार	डॉ. संजय ढोंडरे	71
20	महात्मा गाँधी का आजादी आंदोलन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. निंबा वाल्हे	74
21	सुमित्रानंदन पंत के काव्य में गाँधी दर्शन	डॉ. गोकुलदास ठाकरे	76
22	अमृतलाल नागर के उपन्यासों में गाँधी चिंतन	डॉ. अशोक मराठे	80
23	'मैला आँचल' उपन्यास पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव	डॉ. अभयकुमार खैरनार	83
24	हिंदी काव्य पर गाँधीवाद का प्रभाव	डॉ. अशफाक सिकलगर	86
25	महात्मा गाँधी के नारी संबंधी विचार	डॉ. आर. के. जाधव	90
26	महात्मा गाँधी की स्त्री विषयक विचारधारा	डॉ. वसिम मक्रानी	93
27	'पहला गिरमिटिया' उपन्यास पर गाँधी विचारधारा का प्रभाव	डॉ. इस्माईल हुसेन	96
28	भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में आम आदमी की व्यथाओं का यथार्थ चित्रण (गीतफरोश और सुबह हो गई है इन कविताओं के संदर्भ में)	डॉ. रोहिदास गवारे	98
29	महात्मा गाँधी पर लिखित प्रबंध काव्य का मूल्यांकन	डॉ. महेंद्रकुमार वाढे	101
30	सत्याग्रह और उपवास	डॉ. सुब्राव जाधव	105

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 224 (C) : Relevance of Gandhian Thoughts
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

प्रेमचंद के उपन्यासों में व्यक्त गांधी चिंतन

डॉ. पूनम त्रिवेदी
हिन्दी विभाग,
श्री संत गाडगेबाबा हिंदी महाविद्यालय, भुसावल
मो.क्र.8793670547

उपन्यास पाठक जगत की सर्वाधिक प्रिय साहित्यिक विधा है। इसकी रसात्मक भावाभिव्यक्ति से प्रायः सभी पाठक अभिभूत होते हैं। यह मानव जीवन की अनेकता में एकता तथा अपूर्णता में समग्रता को देखना का प्रयत्न करता है। उपन्यास द्वारा मनुष्य स्वयं का अन्वेषण करता है। इसमें मानव का व्यष्टितः और समष्टितः चित्रित होता है।

हिंदी साहित्य जगत में 'कलम का सिपाही' उपनाम से सुप्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद ने वास्तव में हिंदी उपन्यास को नई दिशा प्रदान की है । उन्होंने अपने उपन्यासों में घटनाओं के निर्माण और उपसंहार में आदर्श का ध्यान रखकर कथा रचना का ताना–बाना बुना है । भारतीय गाँव का जितना यथार्थ अंकन प्रेमचंद ने अपने साहित्य में किया है । उतना किसी अन्य हिंदी के उपन्यासकार में दृष्टिगोचर नहीं होता। उनके उपन्यास आशावाद की सुदृढ़ नींव पर स्थित रहे हैं। वे अपने उपन्यासों द्वारा राष्ट्रीय एवं सामाजिक विकास की भूमि पर कार्य किया है और उनका दृष्टिकोण सदैव बहुजन हिताय बहुजन सुखाय से अनुप्रेरित रहा है ।

उपन्यासकार प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को गति प्रदान की है और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध अपनी वैचारिक आवाज बुलंद किया है। उन्होंने अपने उपन्यास में निम्न और मध्य वर्ग के जन–जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । ग्रामीण समाज के प्रति उनके ह्दय में असीम सहानुभूति थी । यही कारण है कि गाँव के अनपढ़ एवं भोले–भाले किसान, दीन–दुखी जनता, वर्ण व्यवस्था, शहर के शोषित मजदूर आदि उनके विशेष स्नेहभाजन रहे हैं । मानवतावाद के पुजारी होने के नाते मानव मात्र के प्रति सहज आत्मीय भाव रखते थे । वे सत्य और असत्य की पहचान कराते हुए अमानवीय व्यवहार का निर्मलता से तिरस्कार किया है । किंतु कहीं भी उच्च वर्ग के पात्रों के प्रति अन्याय का विरोध करते हुए कुठाराघात नहीं किया है । विविध वर्ग जाति, स्वभाव, संस्कार, सामाजिक स्थिति एवं कुरीति आदि के समर्थक जितने अधिक पात्रों का चित्रण प्रेमचंद ने अपने साहित्य में किया है उतना अन्यत्र दुर्लभ है।

प्रेमचंद ने गांधी युग के तीन चरणों की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियों का चित्रण अपने उपन्यास में किया है। उनका दृष्टिकोण उपयोगितावादी एवं नीतिवादी के ठोस धरातल पर स्थित रहा है। वे आदर्शवादी थे। उनका आदर्श यथार्थ की ठोस भूमि पर स्थित था। उन्होंने समाज की स्वस्थ और अस्वस्थ प्रवृत्तियों को अलग–अलग करके अपने पैने विचार के द्वारा उनका खंडन किया। इसी कारण उन्हें आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासकार की संज्ञा दी गई और वे आज भी उपन्यास सम्राट की उपाधि से विभूषित होकर हिंदी के सामाजिक उपन्यासकारों में मूर्धन्य स्थान पर है।

उपन्यासकार प्रेमचंद द्वारा लिखित 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में गांधीवादी विचारधारा दृष्टिगोचर होती है। ग्राम्य जीवन की विद्रूपताओं एवं दयनीय परिस्थितियों का सफल चित्रण करने वाला यह एक युगांतकारी उपन्यास है। इसमें जमीदारी प्रथा के अंतर्गत पिसती कृषकों की दयनीय स्थिति का निरूपण किया गया है । उपन्यास का पात्र ज्ञानशंकर जमींनदार की क्रूरता का चित्रण पाठकों का दिल दहला देता है। ज्ञानशंकर एक क्रूर, स्वार्थी धनलोलुप व्यक्ति है जो मालगुजारी वसूल करने के लिए गरीब किसानों को धूप में खड़ा करना, उनपर कोड़े बरसाना, किसानों की स्त्रियों के साथ पासविक व्यवहार करना आदि कुटिल गुणों के कारण गाँव में एक आतंक का वातावरण निर्माण करता है। वह केवल किसानों एवं ग़रीब मजदूरों तक ही सीमित न रहकर अपनी विधवा साली गायत्री के साथ भी दुर्व्यवहार करता है। साथ ही उसकी जमींदारी हड़पने की कोशिश करता है और ससुर की जायदाद पर भी कब्जा कर लेता है। वहीं दूसरी ओर

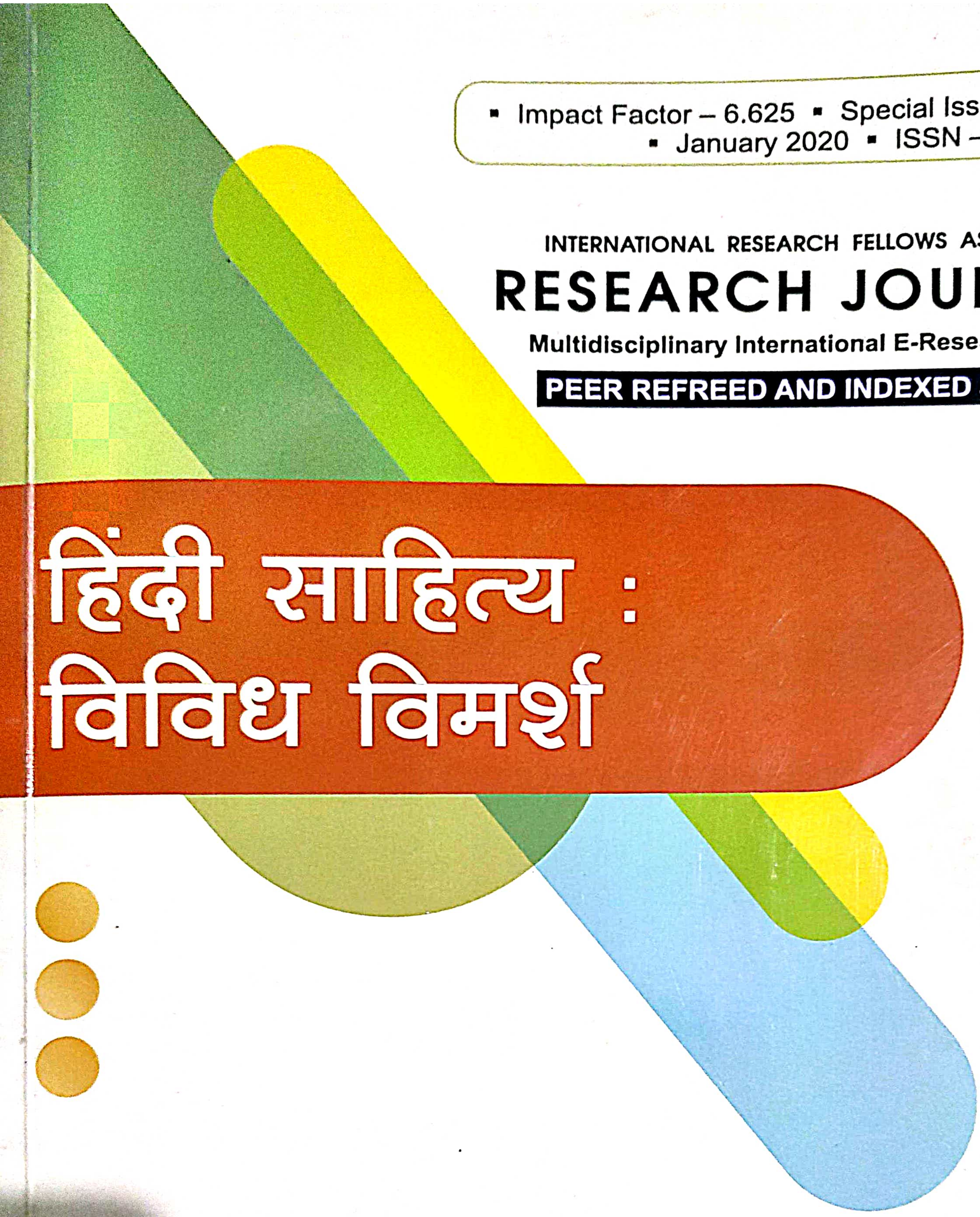

▪ Impact Factor – 6.625 ▪ Special Issue - 214 (B)
▪ January 2020 ▪ ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY
Multidisciplinary International E-Research Journal
PEER REFREED AND INDEXED JOURNAL

हिंदी साहित्य : विविध विमर्श

- कार्यकारी संपादक -
डॉ. जिजाबराव पाटील

- अतिथि संपादक -
डॉ. बी. एन. पाटील

- मुख्य संपादक -
डॉ. धनराज धनगर

Printed By : **PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON**

Impact Factor – 6.625 • Special Issue - 214 (B) • January 2020 • ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY
Multidisciplinary International E-research Journal
PEER REFREED AND INDEXED JOURNAL

हिंदी साहित्य : विविध विमर्श

– कार्यकारी संपादक –
डॉ. जिजाबराव पाटील
एस.एस.एम.एम. कॉलेज,
पाचोरा, जि. जळगाव.

– अतिथि संपादक –
डॉ. बी. एन. पाटील
प्राचार्य, एस.एस.एम.एम. कॉलेज,
पाचोरा, जि. जळगाव.

– मुख्य संपादक –
डॉ. धनराज टी. धनगर
येवला, जि. नाशिक
(महाराष्ट्र) भारत.

– अनुक्रमणिका –

- 'यमदीप' में चित्रित किन्नर १
  डॉ. अनिल साळुंखे
- प्रेमचंद के उपन्यासों में वेश्या विमर्श ३
  डॉ. अरूण घोगरे
- 'यमदीप' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श ५
  डॉ.सुनीता नारायणराव कावळे
- महिला लेखिकाओं का बालसाहित्य में योगदान ७
  प्रा. डॉ. महेश वसंतराव गांगुर्डे
- हिन्दी साहित्य और हाशिए का समाज – मुस्लिम विमर्श ९
  प्राचार्य डॉ. नाना नामदेव गायकवाड
- हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी समाज जीवन ११
  डॉ. योगेश गोकुळ पाटील
- आत्मकथा : गुडिया भीतर गुडिया में चित्रित स्त्री विमर्श १४
  प्रा. डॉ. विजय गजानन गुरव
- 'राजकुमारों के देश में' : आदिवासी जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति १७
  डॉ. सुनील गुलाबराव पानपाटील
- नारी अंत:करण की वेदना कहानी संग्रह – 'मैं द्रौपदी नहीं हूँ' २१
  डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर
- महाश्वेता देवी का उपन्यास 'दौलति' में चित्रित नारी व्यथा २३
  डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार
- जल, जंगल, जमीन के केन्द्र में भारतीय आदिवासी २५
  डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील
- समकालीन उपन्यास साहित्य और हाशिए का समाज २७
  प्रा. डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील
- हाशिए का समाज और बाल विमर्श ('ईदगाह' और 'छोटा जादूगर' के संदर्भ में) २९
  डॉ. सुनील बापू बनसोडे
- प्रेमचंद के साहित्य में किसान विमर्श : 'सवा सेर गेंहु' ३१
  प्रा. उर्मिला सुभाष पाटील
- सामाजिकता के हाशिए पर पडा किन्नर समाज ३३
  प्रा. डॉ. जगदीश बन्सीलाल चव्हाण
- 'पानी के प्राचीर' में चित्रित कृषक विमर्श ३६
  डॉ. अनिल काळे
- महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री–विमर्श ३८
  डॉ. आशा डी. कांबळे
- उपन्यास हम यहाँ थे – जीवन संघर्ष, प्रतिरोध और समर्पण भाव की अभिव्यक्ति ४०
  सह. प्रा. डॉ. महेंद्रकुमार रा. वाढे
- ज्ञानप्रकाश विवेक द्वारा लिखित धूप के हस्ताक्षर ग़ज़ल–संग्रह में व्यक्त सांस्कृतिक विमर्श ४२
  श्री. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी
- 'अंतर्वशी' उपन्यास में संघर्ष एवं मोहभंग को भोगती नारियाँ ४४
  प्रा. डॉ. कृष्णा पी. पाटील

- साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श ……
  प्रो. दीपक विनायकराव पवार
- समकालीन उपन्यास साहित्य में दलित समाज : एक अनुशीलन ……५
  प्रा. भाऊसाहेब नामदेव पाटील
- हिंदी उपन्यासों में किन्नर समाज ……५
  प्रा. राजेश मेरसिंग खर्डे
- भावना कुमारी की ग़ज़लों में नारी चिंतन ('चुप्पियों के बीच' ग़ज़ल संग्रह के विशेष संदर्भ में) ……५
  प्रा. सौ. स्वाती व्ही. शेलार
- वृद्ध जीवन का औपन्यासिक दस्तावेज – 'समय सरगम' ……५
  प्रा. शेख जाकीर एस.
- नासिरा शर्मा के कहानी साहित्य में स्त्री – विमर्श ……५
  प्रा. दिलीप पी. पाटील
- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी जीवन की त्रासदी ……६
  डॉ. बालकवि लक्ष्मण सुरंजे
- अदम गोंडवी की ग़ज़लों में हाशिए का समाज ……६
  प्रा.विजय लोहार
- 'मैं पायल'... उपन्यास में निहित किन्नर विमर्श ……६
  डॉ. कैप्टन बाबासाहेब माने
- मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी विमर्श ……७
  डॉ. रवींद्रकुमार शिरसाट
- हिंदी आत्मकथा साहित्य मे चित्रित नारी विमर्श ……७
  प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव
- नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'बटोही' नाटक का अनुशीलन ……७५
  डॉ. भगवान एन. जाधव
- हिंदी की आदिवासी कविता में नारीवाद (विशेष संदर्भ : निर्मला पुतुल की कविताएँ) ……७८
  डॉ. प्रीति एस. सोनी
- ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में चित्रित नारी विमर्श ……८१
  प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
- नारी मुक्ति का स्वर : 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के संदर्भ में ……८४
  डॉ. अमोल दंडवते
- राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त नारी विमर्श ……८६
  प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
- भारतीय नारी स्वतंत्रता संबंधी महात्मा गांधी जी की विचारधारा ……८९
  प्रा. मच्छिंद्र गुलाब ठाकरे
- भगवानदास मोरवाल की कहानियों में नारी चित्रण ……९१
  प्रा. डिम्पल सुरेश पाटिल
- 'फुगाटी का जूता' में अभिव्यक्त विविध विमर्श की पराकाष्ठा ……९
  प्रा. डॉ. पिरू. आर. गवली
- कबूतरा जाती और समाज के संघर्ष की गाथा – अल्मा कबूतरी ……९
  डॉ.संगीता लोमटे
- स्त्री आत्माभिमान की अभिव्यक्ति – निष्कवच ……९८
  डॉ. शिवाजी वैद्य
- हिंदी ग़ज़लों में व्यक्त सामाजिक विमर्श ……१००
  शाहिन जिवनखान पठाण

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त नारी विमर्श

प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
हिंदी विभाग, श्री संत गाडगेबाबा हिंदी महाविद्यालय,
भुसावल जिला. जलगाँव (महाराष्ट्र)

सारांश

डॉ. राही मासूम रज़ा एक संवेदनशील साहित्यकार है। उनके साहित्य में समसामायिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक विसंगतियों का कुठाराघात करती हुई बेवाक शैली में अभिव्यक्त हुई है। एक प्रगतिशील चिंतक के नाते डॉ. राही का चिंतन किसी संकुचित दायरे में बध्द ने उदारमना की उपज है । उनके साहित्य में व्यक्त सामाजिक समस्याओं के विभिन्न पक्षों के अंतर्गत मुस्लिम नारी की दशा को बखूबी से चित्रित किया गया है। साहित्य में उपन्यास मानव जीवन के अधिक निकट होने के कारण सामाजिक जीवन को अधिक यथार्थता के साथ प्रस्तुत करता है। उपन्यास 'आधा गॉव', 'हिम्मत जौनपुरी', 'ओस की बूँद', 'टोपी शुक्ला', 'दिल एक साधा कागज', 'कटरा बी आर्जू', 'असंतोष के दिन' आदि में समाज में व्याप्त अशिक्षा, दहेजप्रथा, पर्दाप्रथा, विधावाओं की करुण दशा, परित्यक्ता नारी की विवशता आदि की मार्मिक अभिव्यंजना हुई है। साम्यवादी विचारधारा के साहित्यकार राही जी ने बिना किसी दुराव-छिपाव के मुस्लिम समाज में नारी की स्थिति का अंकन किया है। साहित्यकार जिस परिवेश में जीवन-यापन करता है, उस परिवेश का प्रभाव उसके साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। वस्तुत: साहित्यकार समाज के प्रतिबद्ध होता है यह प्रतिबद्धता उनके साहित्य में दिग्दर्शित है।

स्त्री मुक्ति की अवधारणा के एक ईद-गिर्द रचा गया साहित्य स्त्री विमर्श का साहित्य माना जाता है। साहित्य और समाज एक दूसरे से सम्पृक्त है। साहित्यकार जिस परिवेश में जीवन-यापन करता है, उस परिवेश का प्रभाव साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। हमारे समाज में आदिकाल से लेकर आज तक नारी का जीवन संघर्षशील रहा है। आज भी नारी की अनेक समस्यां हैं, जो सदियों से उनका पीछा नहीं छोड़ती। सामाजिक समस्या, पारिवारिक समस्या, वैवाहिक समस्या, विधवा समस्या, यौन समस्या, नारी शिक्षा समस्या आदि ऐसे अनेक समस्याओं से जुड़ी हुई नारी अंतत: अपने आप को एक मानवी रूप में पुरुष के अधिकारों की मांग करती हुई दृष्टिगोचर होती है। हिंदी साहित्य के अंतर्गत हाशिए का समाज जो अभिव्यक्त हुआ है उसमें नारी-विमर्श बहुचर्चित और खुले रूप में दिग्दर्शित है। नारी लेखन आज सामाजिक चेतना का वाहक बन गया है। साहित्य विधा में उपन्यास मानव जीवन के अधिक निकट होने के कारण सामाजिक जीवन को अधिक यथार्थता से बहुत प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि हिंदी उपन्यासों में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की मांग लेकर अनेको साहित्यकारों ने अपनी लेखनी को पूरी सफलता के साथ चलाई है।

राही मासूम रज़ा हिंदी साहित्य जगत में धीर, गंभीर और बेवाकी से बोलनेवाले वाले साहित्यकार के रूप में चर्चित रहे हैं । जिसके कारण अपने प्रत्यक्ष जीवन में उन्हें काफी विरोधों का सामना करना पड़ा। वे साम्यवादी विचारधारा के प्रवर्तक थे। अत: उनके विचारों एवं रचनाओं में एक पैनापन, स्पष्ट सपाट बयानी दृष्टिगत होती है। राही मासूम रज़ा की औपन्यासिक कृतियाँ है- 'आधा गॉव', 'हिम्मत जौनपुरी', 'ओस की बूँद', 'टोपी शुक्ला', 'दिल एक साधा कागज', 'कटरा बी आर्जू', 'असंतोष के दिन' इत्यादि। साहित्यकार राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में समाज की विविध समस्याओं का अंकन करते हुए मुस्लिम नारी विमर्श को बखूबी उकेरा है।

'आधा गाँव' उपन्यास देश-विभाजन की त्रासदी पर आधारित आंचलिक उपन्यास है। जिसमें स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात देश-विभाजन की दयनीय घटनाओं की अभिव्यंजना हुई है। 'आधा गाँव' में सन १९३७ से १९५२ समय परिप्रेक्ष्य में रखकर मुस्लिम परिवारों का चित्रण किया गया है । गंगौली नामक गांव के शिया मुसलमानों के दस परिवारों की पृष्ठभूमि को कथ्य का रूप देकर आधा गाँव की शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध किया गया है । परिवेश और खानदान के बीच शिया मुसलमानों की मनोवृत्ति और पात्रों द्वारा नारी मन की व्यवस्था का अंकन प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त है। देश विभाजन के पूर्व जमींदारी प्रथा के अंतर्गत पुरुष प्रधान समाज की शिया मुसलमानों में यौन संबंध की उन्मुक्तता का चित्रण जिसका शिकार- मैहरूनिया, या सैफुनिया, जुमर्रद, गुलबहरी, झंगारिया बो इत्यादि के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है । शिया मुस्लिम, सुन्नी मुस्लिम से जाति वर्ग के आधार पर भेदभाव रखते हैं परंतु दूसरी ओर अछूत जाति की स्त्रियों से संबंध रखने में नहीं हिचकिचाते हैं। उन दिनों बहुपत्नी विवाह समाज में प्रतिष्ठित माना जाता था। मुस्लिम समाज में इसे मान्यता प्राप्त थी। उनमें यौन संबंधों के कोई नियम नहीं थे इस सत्य को उजागर उपन्यासकार डॉ. राही ने बड़े ही सपाट बयानी अंदाज में लिखा है- ''दूसरा ब्याह कर लेना या किसी ऐसी-गैरी औरत को घर में डाल लेना बुरा नहीं समझा जाता था, शायद ही मियाँ लोगों का कोई ऐसा खानादान हों, जिसमें कलमी लड़के और लड़कियाँ ना हो । जिसके घर में खाने को भी नहीं वे भी किसी न किसी तरह कलमी आमों और कलमी परिवारों का शौक पूरा कर लेते हैं।''[१] इस प्रकार मुस्लिम समाज में नारियों का स्थान पुरुषों का मन बहलाना एवं शारीरिक तृप्ति की वस्तु माना गया है। समाज में स्त्रियों के प्रति पुरुष नजरिया नगण्य हैं। सामाजिक कुटिल परिस्थिति का चित्रण करते हुए नारी की दयनीय अवस्था उपन्यास पात्र थानेदार ठाकुर साहब और समीउद्दीन खाँ के वार्तालाप में अभिव्यंजित हुआ है जिसमें इस्लाम धर्म का मजाक उड़ाते हुए समाज में नारी का स्थान दृष्टिगोचर होता है -

वाह, यह भी कोई मजहब हुआ कि खुद तो पैगम्बर साहब ने नौ-नौ ब्याह कर डाले और बाकी मुसलमानों को चार शादियों पर

Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 232 | February 2020 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY
Multidisciplinary International E-Research Journal
PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

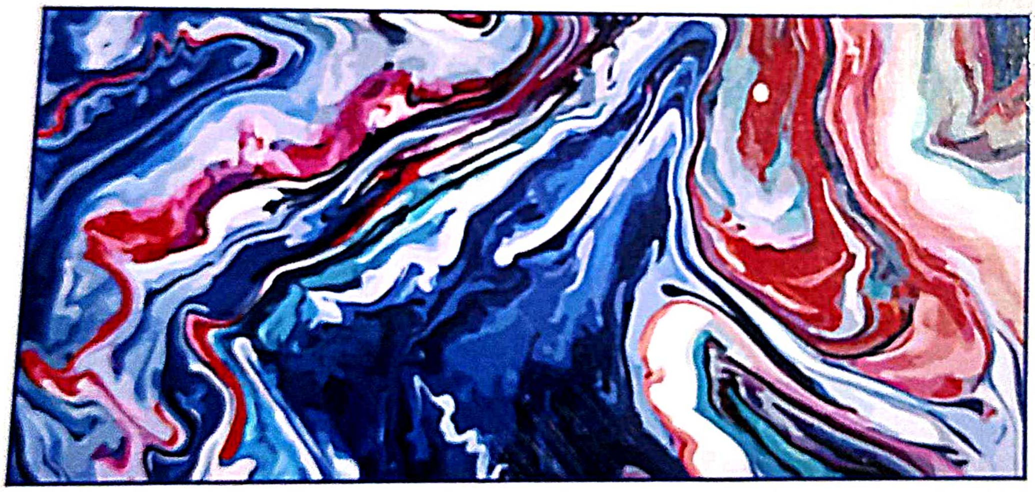

अतिथि संपादक
प्राचार्य डॉ. ए. एस. पैठणे

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज टी. धनगर

कार्यकारी संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे

कार्यकारी सह-संपादक
प्रा. महेंद्र वसावे

For Details Visit To :
www.researchjourney.net

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

[illegible]

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

कार्यकारी संपादक

डॉ. [illegible]

शिक्षा विकास मंडल, [illegible] द्वारा संचालित,
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, [illegible]

अतिथि संपादक

प्राचार्य डॉ. [illegible]

शिक्षा विकास मंडल, [illegible] द्वारा संचालित,
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, [illegible]

कार्यकारी सह-संपादक

प्रा. [illegible]

शिक्षा विकास मंडल, [illegible] द्वारा संचालित,
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, [illegible]

मुख्य संपादक

डॉ. धनराज टी. धनगर

येवला, जि. नाशिक

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

– अनुक्रमणिका –

- 'मुक्तिपर्व' उपन्यास में सामाजिक चेतना १
  डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील
- आदिवासियों की समस्याओं को दर्शाने वाला उपन्यास: पठार पर कोहरा ३
  डॉ. संजयकुमार शर्मा
- 'गुलाम मण्डी' उपन्यास में चित्रित किन्नर समाज की व्यथा चित्रण ७
  प्रा. डॉ. महेश वसंतराव गांगुर्डे
- वर्तमान कृषि संस्कृति की दर्दनाक व्यथा, पीड़ा को प्रस्तुत करता हैं : फाँस उपन्यास १०
  डॉ. सुरेश तायडे
- महानगरीय जीवन में घुटन की त्रासदी ('मकान' उपन्यास के विशेष संदर्भ में) १४
  डॉ. प्रिया ए.
- भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में 'गिलिगडु' में चित्रित वृद्ध जीवन १६
  श्री. सुर्याबा जगन्नाथ शेजाळ, डॉ. बालकवि लक्ष्मण सुरंजे
- अधिकारों के लिए प्रयासरत एक समाज सन्दर्भ– मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास–अल्मा कबूतरी १९
  डॉ. वन्दना श्रीवास्तव
- इक्कीसवीं सदी के आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास ('ग्लोबल गांव के देवता' तथा 'गायब होता देश' के संदर्भ में') २२
  प्रा. अनिल गामीत
- २१ वीं सदी के उपन्यासों में दस्तक देता वृद्ध विमर्श २३
  सुश्री डाने कायी
- अस्तित्व के लिए जूझती सरयू २५
  डॉ. रेखा गाजरे
- इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में बदलती नारी प्रतिमा (अन्तर्वंशी उपन्यास के विशेष संदर्भ में) २९
  प्रा. डॉ. कामिनी भवानीशंकर तिवारी
- रिश्तों की तलाश करता किन्नर समाज – 'तीसरी ताली' ३१
  डॉ. राजेंद्र के. जाधव
- वैश्वीकरण की चपेट में दरकते दाम्पत्य संबंध (से.रा.यात्री के 'मायामृग' उपन्यास के संदर्भ में) ३३
  प्रा. डॉ. सुनील गुलाब पानपाटील
- दलितों की गुलामी का 'मुक्ति–पर्व' ३५
  प्रा. डॉ. गौतम भाईदास कुवर
- संपूर्ण एकता के दावें को ठोकर मारता उपन्यास:– यमदीप ३
  प्रा. डॉ. पंढरीनाथ शिवदास पाटील
- 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में सामाजिकता ४
  प्रा. डॉ. सुनीता एन. कावळे
- कही ईसुरी फाग में स्त्री की स्थिति ....
  प्रा. डॉ. सविता काशिराम तायडे
- इक्कीसवीं सदी का हिंदी उपन्याास साहित्य अमरकांत के विशेष संदर्भ में ....
  डॉ. योगेश गोकुळ पाटील

- अयोध्या में ध्वंसलीला : 'आखिरी कलाम' ८९
  डॉ. अमृत बिसन खाडपे
- मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रेम एवं काम की अभिव्यक्ति ९१
  प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
- नारी अस्मिता की पहचान कराता मधुर कपिला का उपन्यास – 'सातवां स्वर' ९५
  डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार
- ''गिलिगडु : बदलते मानवमूल्यों की कथा'' ९७
  डॉ. अशोक शामराव मराठे
- समाज जीवन को उन्नत जीवन प्रदान करने वाली नवचैतन्य की निरंतर धारा – 'सुखदा' ९९
  डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील
- ''भगवानदास मोरवाल के उपन्यसों में स्त्री–विमर्श'' १०२
  प्रा. डॉ. मनोहर हिलाल पाटील
- 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १०४
  प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील
- 'विजन' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श १०६
  प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
- 'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष १०८
  प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे
- ''सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में नारी चेतना'' ('दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' एवं 'मुझे चाँद चाहिए' के विशेष संदर्भ में) १११
  डॉ. संजय प्रल्हाद महाजन
- गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श ११३
  प्रा. डॉ. विजय एकनाथ सोनजे
- जीवन की त्रासदी को दर्शाता उपन्यास – 'वेसवव' ११६
  डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर
- उच्च शिक्षित कामयाव वच्चों के वृध्द माता–पिताओं के मन में 'डर' और 'भय' को व्यक्त करने वाला उपन्यास–''दौड'' ११८
  डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे
- ''२१ वीं शताब्दी का हिन्दी उपन्यास साहित्य'' १२०
  डॉ. विजय जी. गुरव
- कठगुलाव उपन्यास में नारी चित्रण (मृदूला गर्ग) १२३
  प्रा. शरद शेलार
- २१ वी सदी के महिला उपन्यासों में नारी चेतना १२५
  श्री. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
- 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १२७
  डॉ. निंबा लोटन वाल्हे
- नारी वेदना का दस्तावेज 'तिनका तिनके पास' १२८
  डॉ. ईश्वर टाकुर
- ''टूटा हुआ इंद्रधनुष'' उपन्यास में पारिवारिक विघटन १३०
  डॉ. आनंद गुलावराव खरात
- मैत्रेय पुष्पा का उपन्यास गुनाह–वेगुनाह में चित्रित नारी संघर्ष १३३
  प्रा. तुलसा मोची

'विजन' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श

प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
हिन्दी विभाग,
श्री संत गाडगेबाबा हिंदी महाविद्यालय, भुसावल

इक्कसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में समय और समाज का स्पष्ट प्रतिबिंब अपने नए कलेवर एवं अंदाज के साथ पाठकों के बीच नई चेतना का संचार करते हुए दृष्टिगत होता है । यह सदी वादों को छोड़कर वैचारिकता से भरा हुआ भारतीय समाज और संस्कृति पर सवालिया निशान खड़ा कर दिया है। जिसमें बाजारवाद, उपभोक्तावाद भूमंडलीकरण, पश्चिमी संस्कृति का सीमा आक्रमण, मूल्य की दरकन और टूटन, अर्थमूल्य का वर्चस्व के बीच स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी विमर्श, उत्तर आधुनिक विमर्श, राजनीतिक और सांप्रदायिक विमर्श आदि को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

इक्कीसवीं सदी नारी स्वतंत्रता का पक्षधर है। पुरुष प्रधान मानसिकता को मात करती स्त्री-मन की पीड़ा, विद्रोह एवं 'स्व' की पहचान के लिए आवाज बुलंद करती हुई स्त्री लेखन ह्दय को आंदोलित करता अभिव्यंजित है। यही कारण है कि २१वीं सदी का महिला लेखन स्त्री-पुरुष संबंधों में एक नए समीकरण की तलाश है। हिंदी कथा-लेखन के क्षेत्र में महिला लेखिकाओं में जो सर्वाधिक ख्यातिनाम है -उनमें मैत्रयी पुष्पा का नाम अग्रणी है। नारी व्यथा-कथा का चित्रण करने में काफी सफलता उन्हें मिली है, जिसके कारण वें काफी चर्चित भी रही है।

सन २००२ में प्रकाशित 'विजन' उपन्यास उच्च शिक्षित नारी के लिए प्रताड़ित जीवन जीने के लिए अभिशप्त नारी मन की व्यथा को व्यक्त करती है। प्रस्तुत उपन्यास में मैत्रयी पुष्पा ने 'विजन' अंग्रेजी शब्द जिसका साधारण अर्थ होता है -

दृष्टिक्षेप में आने वाला भाग, असामान्य दृष्टि, दिव्यदृष्टि, कल्पनाशक्ति पर आधारित दृष्टिगत होने वाला दृश्य । लेकिन 'विजन' मात्र दृष्टि ही नहीं बल्कि दृष्टिकोण की भी तलाश है। इस उपन्यास में चिकित्सा के क्षेत्र में व्याप्त धोखाधड़ी, काले कारनामे, रिश्वतखोरी, पैसा कमाने की प्रतिष्ठा जरिया आदि कई बातों की कलाई खोली गई है और उस अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने वाली नारी का चित्रण किया गया है ।

विवेच्य उपन्यास में डॉ. नेहा और डॉ. आभा का शोषण समाज में व्याप्त पुरुष प्रधान मानसिकता को दर्शाता है। डॉ. नेहा और डॉ. आभा जैसी कुशल डॉक्टर केवल स्त्री होने के कारण अपने अधिकारों से वंचित रहती हैं। उन्हें पग-पग पर लांछन और उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। 'शरण आई सेंटर' के डॉ आर. पी. शरण अपने हॉस्पिटल को आगे चलाने के लिए अपने बेटे अजय को डॉक्टर बनाने के लिए लाखों रुपए खर्च करते हैं। किंतु अपना व्यवसाय बढ़ाने के लिए मध्यमवर्गीय लडकी डॉ. नेहा से अपने पुत्र अजय का विवाह करते हैं। हालांकि डॉ. नेहा अजय की पैसों के बल पर प्राप्त डिग्री से घृणा करती है। वह डॉ. अजय से विवाह करने से इंकार करती है किंतु नेहा के माता-पिता धनवान डॉ आर. पी. शरण के घर उसका विवाह करने को तैयार हो जाते हैं। डॉ. नेहा सामाजिक व्यवस्था की मजबूरी में बंधी डॉ. अजय के साथ ब्याह दी जाती है । यह समाज की विडंबना है, एक पढ़ी-लिखी लड़की को अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार नहीं है।

डॉ. नेहा एक योग्य डॉक्टर है । उसकी योग्यता को पहचानने के कारण ही डॉ. शरण उसे अपनी बहू बनाते हैं। किंतु विवाह के बाद डॉ. नेहा को अपने पति डॉ. अजय और ससुर डॉ.शरण के हाथों की कठपुतली बनने के सिवाय कोई चारा नहीं रह जाता है। उसे संपूर्ण अधिकारों से वंचित रखा जाता है। डॉ. नेहा अपने पति का विरोध करती है, तब उसे नाना प्रकार से प्रताड़ित किया जाता है। काबिल होने पर भी उसे अपने सेंटर में सर्जरी का अधिकार नहीं दिया जाता। गरीब मरीजों के प्रति उसका स्नेहभाव पैसों का लोभी डॉ. शरण को कतई पसंद नहीं है। अतः वह डॉ. नेहा को ऑपरेशन थिएटर का प्रबंधक बनाता है और सर्जरी के माध्यम से रोगियों से दुगने पैसे वसूल करता है। डॉ. नेहा मन ही मने व्यवस्था के प्रति आक्रोश रखती है किंतु अपने ससुर और पति के दबाव में आकर मात्र घुटती रहती है। इतना ही नहीं गर्भवती डॉ. नेहा को एम.एस. की पढ़ाई छोड़कर संतान के महत्व की शिक्षा दी जाती है। अपने करियर और संतान के बारे में भी निर्णय लेने का अधिकार उसे नहीं दिया जाता। इस प्रकार डॉ. नेहा व्यवस्था के चक्रव्यूह में फँसी नारी के रूप में चित्रित की गई है । उसे पता है कि उसका शोषण होता रहा है। परंतु वह पति और ससुर के विरोध में कुछ नहीं कर पाती है । डॉ. नेहा के अंतर्मन में कुंठा और घुटन का निर्माण होता है । वह अपने जीवन में उड़ान भरने की कोशिश करती है तो उसका पर कतर दिया जाता है । चिकित्सा के क्षेत्र में उसका पति डॉ. अजय अपरिपक्व है किंतु जालसाजी और धोखाधड़ी में वह माहिर है । एक सुशिक्षित महिला होने के बावजूद डॉ.नेहा ने अपने पति और ससुर के दुष्चक्रों में घुटती-पिसती एक चलती फिरती लाश की तरह जीवन व्यतीत करने लगती है । अपने पति डॉ. अजय द्वारा गलत उपचार के कारण रोगी की मृत्यु पर अत्यंत दुखी होती है और मृत्यु का कारण डॉ. नेहा पर थोपे जाने का कारण वह संतुलन खो बैठी है। अतं में वह परिवार के विरुद्ध डॉ. आभा के हॉस्पिटल में ही काम करने लगती है।

उपन्यास की दूसरी स्त्री पात्र डॉ. आभा व्दिवेदी है । आभा को अपने पति की अनुगामिनी नहीं सहगामिनी बनना पसंद है। डॉ. आभा की शादी बरेली के डॉ. मुकूल से होती है। आभा विवाह उपरांत एक सुखद जीवन की कामना लेकर ससुराल आती है। जहाँ उसे डॉ. मुकुल के आदेश का पालन करना पड़ता है। नेत्र चिकित्सक के रूप

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal _ http://www.vidyawarta.blogspot.com

|| Index ||

1) वेश्या-जीवन का मार्मिक आख्यान - सलाम आखिरी
डॉ. मधुकर खराटे || 15

2) अन्तर्वंशी का अन्तरंग
डॉ. कामिनी भवानीशंकर तिवारी || 20

3) महानगरीय सभ्यता के बीच टूटते जीवन मूल्यों का चित्रण – नरक मसीहा
डॉ.जिजाबराव विश्वासराव पाटील || 24

4) दलित समाज के शोषण उत्पीड़न की व्यथा कथा है : मुक्तिपर्व
डॉ. सुरेश तायडे || 27

5) इक्कीसवीं सथी के उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज और सामाजिक जीवन
ड़ॉ. सुनील बी. कुलकर्णी & डॉ.प्रीति एस.सोनी || 31

6) " रुकोगी नहीं राधिका" उपन्यास में आधुनिक नारी "
डॉ. ममता गोखे || 34

7) कृष्णा अग्निहोत्री कृत उपन्यास मैं अपराधी हूँ में सामाजिक यथार्थ
डॉ. हिरल शादिजा || 37

8) जीरो रोड' उपन्यास में चित्रित साम्प्रदायिकता
डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर || 41

9) अम्मा' उपन्यास में चित्रित राष्ट्रप्रेम
डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार || 43

10) बिरुवार गमछा तथा अन्य कहानियाँ' कहानी संग्रह में आदिवासी दर्शन
प्रा. डॉ. गौतम कुवर || 46

11) लाल लकिर उपन्यास में व्यक्त नक्सलवाद
प्रा.डॉ. महेंद्रकुमार रा. वाढे || 49

12) डॉ. हेमराज सिंह का 'मुआवजा' कहानी संग्रह में नारी विमर्श
डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील || 53

26) इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानियों में वृद्ध जीवन
प्रा. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी || 90

27) प्रथम दशक की हिन्दी दलित कहानियाँ
डॉ. सुनीता एन. कावले || 93

28) इक्कीसवी सदी के उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में नारी विमर्श की अवधारणा
प्रा. डॉ. मुकेश दामोदर गायकवाड मुकेशराजे || 96

29) `नया ज्ञानोदय` में प्रकाशित कहानियों में चित्रित समस्याएँ
डॉ. राजेश भामरे, || 99

30) ए. बी. सी. डी. उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श
प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी || 103

31) ``इक्कीसवीं सदी का हिन्दी कथा साहित्य: `अंधेरे का ताला`में व्यक्त संवेदना``
प्रा.डॉ. पिरू आर. गवली || 106

32) उषा महाजन की कहानियों में चित्रित संघर्षशील नारी
प्रा. डॉ. योगेश गोकुळ पाटील || 109

33) आदिवासी उपन्यासों में स्त्री विमर्श
प्रा. डॉ. जयश्री गावित || 111

34) नरक मसीहा की एक कड़वी सचाई
डॉ. जगदीश वन्सीलाल चव्हाण || 114

35) "ममता कालिया का उपन्यास 'दुक्खम सुक्खम' में चित्रित नारी पीड़ा"
डॉ. विजयप्रकाश ओमप्रकाश शर्मा || 118

36) समकालीन उपन्यास कहानी कोई सुनाओं मिताशा पर चिंतन
प्रा. भाईदास रघुनाथ पाटील || 120

37) २१ वीं शती के उपन्यासों में नारी विमर्श
प्रा. डॉ. अनिता नेरे भामरे || 124

38) अमानवीय व्यवहार का जीता-जागता दस्तावेज- तापसी
डॉ. कान्ता एम. भाला राठी || 127

39) अंतर्वंशी उपन्यास में नारी विमर्श`
प्रा.डॉ. हुकूमचंद शंकर जाधव || 129

प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष २००३ की ज्ञानोदय पत्रिकाओं में ३४ कहानियों में सामाजिक समस्या के अंतर्गत विधवा समस्या, अविवाहित स्त्री की समस्या, दाम्पत्य संबंध में टूटन की समस्या, आदिवासी शोषण, दिव्यांग संतानो की समस्या, भिखारियों की समस्या, मजदूरों की शोषण समस्या, अवैध संतानों की समस्या, बालसुधार गृहों में बालकों के शोषण की समस्या तथा राजनीतिक समस्याओं के अंतर्गत युद्ध की समस्या, शैक्षिक समस्या और धार्मिक समस्या के अंतर्गत अंधश्रद्धा की समस्याओं का चित्रण बखूबी हुआ हैं।

संदर्भ सूची

१) प्रभाकर श्रोत्रिय, ‘नया ज्ञानोदय’, संपादकीय, जून २००३, पृ. २५

२) डॉ. विमल भास्कर, ‘हिन्दी में समस्या साहित्य’, पृ. ३५.

३) डॉ. रेखा कुलकर्णी, ‘हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी’, पृ २५३

४) नया ज्ञानोदय दिसम्बर २००३, ‘रमसिंह ग्रहण’, पृ. ३२, ३३.

५) डॉ. आसाराम बेवले, ‘समकालीन हिंदी नाटकों में नारी के विविध रूप’, पृ. ६८.

६) नया ज्ञानोदय, दिसम्बर २००३, ‘जयशंकर - भुरमुंडा’, पृ. २६.

७) नया ज्ञानोदय दिसम्बर २००३, ‘जय नंदन - अपदस्थ’, पृ. ८५.

८) नया ज्ञानोदय, दिसम्बर २००३, ‘जयशंकर - भुरमुंडा’, पृ. ६८.

९) नया ज्ञानोदय, दिसम्बर २००३, ‘रमासिंह ग्रहण ’, पृ. ३७.

१०) नया ज्ञानोदय, जून २००३, ‘पुन्नीसिंह अंतर्कथा’, पृ. ६३-६४.

११) नया ज्ञानोदय, दिसम्बर २००३, ‘हिरालाल नागर - डेक पर अंधेरा’, पृ. १०५.

१२) नया ज्ञानोदय, दिसम्बर २००३, ‘नफीस आफरीदी - घर पहाड़ होता है।’, पृ. ८९.

❑❑❑

30

ए. बी. सी. डी. उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श

प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
श्री. संत गाडगेबाबा हिंदी महाविद्यालय, भुसावल,
जि. जलगाँव (महाराष्ट्र)

****

भूमंडलीकरण एक व्यापक अवधारणा है जिसमें हम भौतिक रूप से एक-दूसरों के बहुत नजदीक आ गए है। उपभोक्तावाद और सूचनाक्रांति के बढ़ते चरण ने देश, समाज और परिवार को काफी प्रभावित किया है। सम्प्रति, हिंदी साहित्य जगत में हमें स्त्री-चिंतन का बदलता स्वरूप परिलक्षित होता है। नारी साहित्य लेखन में नारी के अस्तित्त्व, अधिकार, अनुभूतियों का चित्रण हो रहा है। यही कारण है कि हिंदी कथा-साहित्य में नारी-विमर्श लेखन के अन्तर्गत विवाह संस्था, विवाहेतर संबंध, यौन संबंध, लिव इन रिलेशनशिप, विदेशी संस्कृति, समलैंगिकता जैसे विषयों पर अबाध गति से लेखनी चलाई जा रही है। जो स्त्री की छवि को ईमानदारी से प्रस्तुत करने का एक सकारात्मक प्रयास है।

‘ए. बी. सी. डी.’ रवीन्द्र कालिया का एक सशक्त नारी विमर्श उपन्यास है। वर्ष २०१३ में प्रकाशित यह लघु उपन्यास हमें प्रवासी भारतीयों की संस्कृति के संकट से रू-ब-रू करता है। भारतीय संस्कृति की दृष्टि से पाश्चात्य संस्कृति अपसंस्कृति के रूप में दृष्टिगोचर होती है। उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास में मूल भारतीय परिवार की कथा के माध्यम से विदेशों में विस्थापित परिवार की टूटती, विखंडित होती हुई परमपराओं का दर्द चित्रित किया हैं। यह सांस्कृतिक द्वन्द्व की कथा है। यह दो पीढ़ियों के बीच की जीवन मूल्यों का टकराव दिग्दर्शित करती है।

मूल भारतीय निवासी हरदयाल और शील कनाड़ा में जा बसते है जहाँ उनकी दोनों बेटियाँ शीनी और नेहा की परवरिश विदेशी संस्कृति के बीच होती है। शीनी और नेहा की निगाह में भारतीय संस्कृति पिछड़ी हुई है। उन्हें पश्चिमी संस्कृति और रहन-सहन से अधिक प्यार है। इस उपन्यास में लेखक ने बदलते समय और पढ़े-लिखे युवा पीढ़ी के मन की बात को उकेरा है।

Impact Factor – 3.452

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

April-May-June- 2017

Vol. 4, Issue 2

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

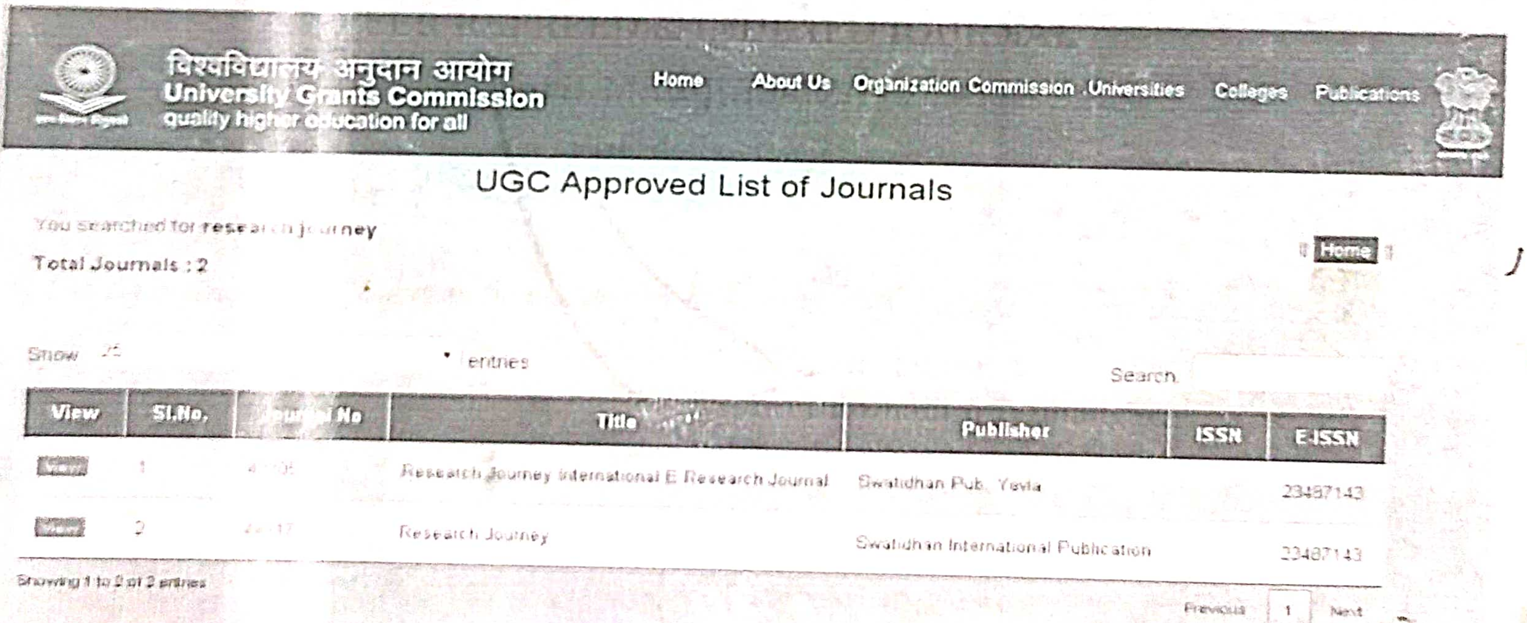
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
quality higher education for all
Home
About Us
Organization
Commission
Universities
Colleges
Publications
Home

UGC Approved List of Journals

You searched for research journey

Total Journals : 2

Show 25 entries

Search

View	Sl.No.	Journal No	Title	Publisher	ISSN	E-ISSN
View	1	[illegible]	Research Journey International E Research Journal	Swatidhan Pub. Yevla		23487143
View	2	[illegible]	Research Journey	Swatidhan International Publication		23487143

Showing 1 to 2 of 2 entries

Previous 1 Next

This Journal is indexed in :

- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)

RESEARCHJOURNEY

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

नागार्जुन के उपन्यासों में व्यक्त नारी विमर्श

प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी

हिंदी विभाग,
श्री संत गाडगेबाबा हिंदी महाविद्यालय, भुसावल
जि. जलगाँव (महाराष्ट्र)
मो. ८७९३६७०५४७

सारांश :

नागार्जुन हिंदी साहित्य जगत के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार हैं। उन्होंने अपनी रचना में युग की सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक अंधविश्वासों का खंडन किया है। स्त्री समाज से उन्हें गहरी सहानुभूति है। यही कारण है कि स्त्री-अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण आदि के यथार्थ चित्रण पूर्ण प्रखरता के साथ उनके उपन्यासों में अभिव्यंजित हुए हैं। नागार्जुन अपने उपन्यासों में मिथिला जनपद की समस्याओं को, विशेषकर वहाँ के समाज में व्याप्त नारी जीवन की समस्याओं से ही कथ्य का ताना-बाना बुना है। उनके उपन्यासों में चित्रित विधवा जीवन की असहनीय पीड़ा सामंती समाज के प्रति घोर विरोध की दर्शाता है। `उग्रतारा` की उगनी, `दुःखमोचन` की माया तथा ससुराल का त्याग कर पितृ गृह में रहनेवाली मधुरा का क्रांतिकारी निर्णय नारी जागरूकता का प्रतिनिधित्व करती है। ये नारियाँ समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों और व्यभिचार के प्रति विद्रोह करती चित्रित हुई हैं। साथ ही अपने स्वाभिमानी व्यक्तित्व की छाप भी पाठकों के मन पर छोड़ जाती है।

नागार्जुन के उपन्यासों में व्यक्त नारी विमर्श :

साहित्य का अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास मानव जीवन के अधिक निकट रहनेवाली विधा है। जिसके कथा के केन्द्र में मनुष्य का चरित्र होता है और वह मानव जीवन को एवं उसकी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता है। नागार्जुन हिंदी साहित्य जगत के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार हैं। उन्होंने अपनी रचना में युग की सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक अंधविश्वासों का खंडन किया है। स्त्री समाज से उन्हें गहरी सहानुभूति है। यही कारण है कि स्त्री-अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण आदि के यथार्थ चित्रण पूर्ण प्रखरता के साथ उनके उपन्यासों में अभिव्यंजित हुए हैं। साहित्यकार नागार्जुन का समाज के प्रति जागरूकता और प्रतिबध्दता उनकी लेखनी के माध्यम से दृष्टिगोचर होती है, जहाँ वे जातिप्रथा, नारी की सामाजिक स्थिति, नारी जीवन की समस्याएँ, नर-नारी संबंध, सामाजिक मूल्य संघर्ष आदि बिंदुओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

भारतीय समाज में नारी का विधवा-जीवन अभिशप्त हैं। उन्हें सामाजिक व्यवस्था के अन्दर क्रूर, अमानवीय व्यवहार सहन करना पड़ता है। वे समाज में उपेक्षित और प्रताड़ित जीवन जीने को बाध्य होती है। नागार्जुन के उपन्यासों में विधवा नारी जीवन की व्यथा-कथा अत्यधिक आत्मीयता और मार्मिकता के साथ अंकित है। वे नारी उध्दार के प्रबल समर्थक हैं। इसलिए नागार्जुन के उपन्यासों में समाज और शास्त्र द्वारा प्रताड़ित नारियाँ ही मूल प्रेरणा में विद्यमान हैं। उपन्यास `रतिनाथ की चाची` की गौरी का वैधव्य उसके संपूर्ण जीवन में कलंक, उपहास और घुट-घुटकर मरने को विवश करता है। पति की मृत्यु के पश्चात् अपने ही देवर की कामवासना की शिकार गौरी तमाम उम्र आँसू बहाती हुई ग्लानि की अग्नि में जलती हुई पग-पग पर समाज द्वारा प्रताड़ित होती है। इतना ही नहीं अपने जिस बेटे को पाल-पोसकर वह बड़ा करती है, वही बेटा माँ को कलंकिनी कहकर उसे लात मारता है। पुत्रवहू भी उसे भला-बुरा कहती है। इन सारी यातनाओं से वह टूटकर आत्महत्या का प्रयास करती है किन्तु रतिनाथ का निश्छल प्यार उसे जीने को बाध्य करता है। किन्तु प्रस्तुत उपन्यास में विधवा दमयंती स्वयं आचरणहीन होते हुए भी समाज के धनवान लोगों की छाया में शतरंज की खिलाड़िन बन जाती है और समाज की पवित्रता बनाये रखने का ठेका उसी ने ले रखा है। सुमित्रा नामक विधवा स्त्री पति के देहांत के बाद अपने सारे अरमानों का गला घोंटकर वैधव्य जीवन जीती है परंतु सुमित्रा की देवरानी चन्द्रमुखी विधवा होकर भी अपनी

"स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी साहित्य का अवदान"

प्रकाशन - ए. आर. पब्लिशिंग कंपनी
के. 37 अजीत विहार-दिल्ली
ISBN- 978-93-94165-23-6

अनुक्रम

सम्पादकीय 5

संवेदनात्मक सत्याग्रह है कला 13
—नंदकिशोर आचार्य

स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी-मराठी साहित्य का अवदान 17
—डॉ. जोगेन्द्रसिंह बिसेन

स्वाधीनता-आंदोलन में छायावादी कवियों का अवदान 24
—प्रो. अनिल राय

प्रगतिवादी हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता 33
—डॉ. सिद्धेश्वर कश्यप

हिन्दी साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 40
—डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का हिन्दी काव्य 48
—प्रो. डॉ. शशिकांत 'सावन'

स्वामी विवेकानन्द से प्रेरित हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा 56
—डॉ. लखेश्वर चन्द्रवंशी 'लखेश'

स्वतंत्रता आन्दोलन और स्त्री चिंतन 65
—डॉ. अमिता दुबे

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और हिन्दी साहित्य 79
—डॉ. संतोष गिरहे

आजादी के आंदोलन में साहित्य का अवदान 83
—प्रो. डॉ. अर्जुन चव्हाण

स्वाधीनता संघर्ष और साहित्य 94
—डॉ. मनोज पाण्डेय

राष्ट्रीय चेतना की सशक्त कवयित्री : सुभद्रा कुमारी चौहान 188
—डॉ. एकादशी एस. जैतवार
स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी भाषा और साहित्य की भूमिका 194
—चित्रा श्रीकांत कटकवार
सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर 198
—जागृति सिंह
राष्ट्रवाद के पुरोधा पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' 204
—डॉ. रघुनाथ पाण्डेय
स्वाधीनता संघर्ष और हिन्दी साहित्य : एक अवलोकन 209
—डॉ. स्नेहा सिंह
स्वतंत्रता संग्राम में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान 215
—डॉ. मेघना शर्मा
स्वतंत्रता संघर्ष के पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चंद्र 219
—डॉ. रचना लारिया
स्वतंत्रता संघर्ष के उद्घोषक कवि महाप्राण निराला 227
—डॉ. गिरजा शंकर गौतम
स्वतंत्रता संघर्ष और हिन्दी साहित्य 235
—डॉ. नीलम हेमंत वीरानी
नागार्जुन के उपन्यासों में स्वाधीनता संग्राम की अनुगूँज 243
—डॉ. पूनम त्रिवेदी
स्वतंत्रता संघर्ष में चर्चित-अचर्चित हिन्दी साहित्यकार 247
—डॉ. रमणी चन्द्राकर
स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान 252
—डॉ. रवींद्र जाधव
पं. सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना 256
—डॉ. विजय कलमधार
स्वतन्त्रता संघर्ष में हिन्दी भाषा और साहित्य की भूमिका 262
—डॉ. संतोष कुमार लिल्हारे
भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी सिनेमा की भूमिका 270
—प्रीत लालवानी
स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी-मराठी साहित्य का अवदान 278
—श्रीमती माधुरी गोपाल मिश्रा

नागार्जुन के उपन्यासों में स्वाधीनता संग्राम की अनुगूँज

डॉ. पूनम त्रिवेदी

हिन्दी उपन्यास साहित्य में नागार्जुन की गणना श्रेष्ठ उपन्यासकार के रूप में की जाती है। उन्होंने देश की अंचल की बहुआयामी लोक संस्कृति को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और माटी की सोंधी गंध की यशोगाथा को उपन्यासों में सुरभित किया है। कोई भी सजग और संघर्षशील रचनाकार अपने समय की अनुगूंज से अछूता नहीं रह सकता। नागार्जुन एक ऐसे ही कथाकार है, जिनका देश की सम-सामायिक राजनीति से गहरा संबंध रहा है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों में अपनी सहभागिता निभाई है। यही कारण है कि नागार्जुन के उपन्यासों में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की स्थापना भी व्यक्ति मिलती है। जिसमें 1920 का असहयोग आंदोलन, 1930 का सविनय अवज्ञा आंदोलन और 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन प्रमुख है। साहित्यकार नागार्जुन भी प्रेमचंद की भाँति जनवादी कथा परंपरा को आत्मसात करते हुए राजनीति में साहित्यिक की क्रांतिकारी भूमिका को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए उन्होंने अपने साहित्य को राजनीति से अलग नहीं माना है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व स्वाधीनता आंदोलन में गांधी जी के 1920 के अहिंसात्मक आंदोलन के बारे में नागार्जुन ने अपने बहुचर्चित उपन्यास बाबा बटेश्वर नाथ में देश की सम-सामायिक राजनीतिक परिस्थितियों का यथार्थ अंकन किया है। यह उपन्यास ग्राम जीवन के उत्थान-पतन और परिवर्तन का सामाजिक यथार्थ स्वरूप प्रस्तुत करता है। जिसमें वर्ग और संप्रदाय के मध्य विभाजित सीमा रेखा पर मानव संवेदना का पुल दिग्दर्शित होता है। विवेच्य उपन्यास में समय और परिस्थिति के परिवर्तन को केंद्र में रखते हुए नागार्जुन ने मानवीय संवेदनाओं के मूल्य का आंकलन किया है। बाबा बटेश्वर नाथ जो जैकिसुन को बीते हुए असहयोग आंदोलन की सफलता और असफलता की व्यथा कथा सुनाते हुए देश की राजनीतिक परिस्थितियों से अवगत कराते हैं। मार्क्सवादी विचारधारा से

ISSN 2582-5429 (online)

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2020 Vol.02 ISSUE. II (B)

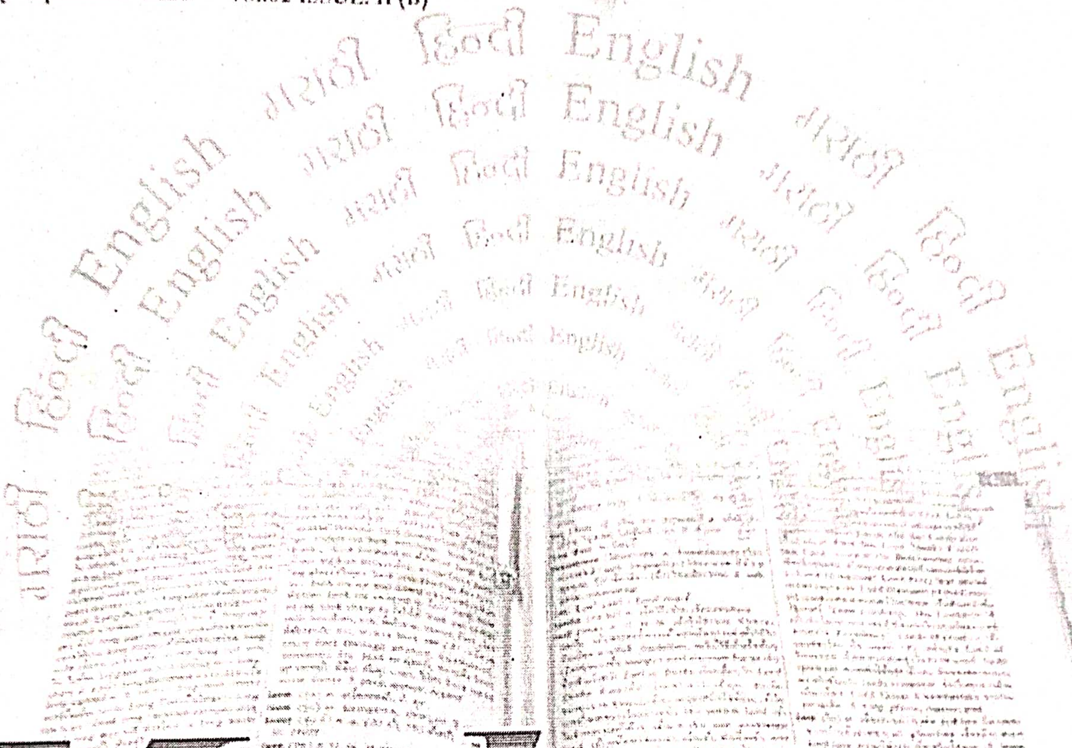

Modern
Trends in Literature

MARATHI | HINDI | ENGLISH

Guest Editor
Dr.Smt. S. M. Sonawane
Acting Principal
Arts, Commerce & Science College,
Yawal Dist. Jalgaon, Maharashtra

Associate Editor
Dr.Smt. S. M. Kharate Dr.S.P.Kapade Dr.P.V.Pawara
Arts, Commerce & Science College, Yawal
Dist. Jalgaon, Maharashtra

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli , AMRJ, Yawal
For Details Visit To – www.aimrj.com

Akshara Publication

ISSN 2582-5429(online)

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2020 VOL.02. ISSUE II (B)

Modern Trends in Literature
(Marathi, Hindi & English)

www.aimrj.com
Email ID. aimrj18@gmail.com

Index

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Page No.
17	गुलाममंडी उपन्यास में अभिव्यक्त किन्नर-विमर्श	डॉ.बालकवि लक्ष्मण सुरंजे	83-86
18	मराठी दलित साहित्य का हिंदी दलित साहित्य पर प्रभाव	डॉ. वसंत पुंजाजी गाडे	87-89
19	हिंदी साहित्य में आधुनिक प्रवृति	वसुंधरा देसाई	90-93
20	`बीस बरस` उपन्यास में व्यक्त ग्राम्य जीवन	प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी	94-97
	इंग्रजी विभाग		
21	**GLIMPSES OF MODERN ENGLISH LITERATURE**	**Mrs. Asmita Vivek Joshi**	**98-102**
22	**MODERN DEVELOPEMENT & CHANGES IN ENGLISH LITERATURE – A STUDY**	Asst .Prof : Sarika B. Khobragade	**103-105**
23	Modern Trends In Literature After Covid-19	Dr.Hemant Sudhakar Dalal	**106-108**

ISSN 2582-5429(online)
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2020 VOL.02. ISSUE II (B)
Modern Trends in Literature
(Marathi, Hindi & English)
www.aimrj.com
Email ID. aimrj18@gmail.com

`बीस बरस` उपन्यास में व्यक्त ग्राम्य जीवन

प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
श्री. संत गाडगेबाबा हिंदी महाविद्यालय,भुसावल, जि. जलगाँव (महाराष्ट्र)
मो. नं. 8793670547

समकालीन समय समस्त विश्व के लिए चुनौती भरा समय है। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस की कहर से सम्पूर्ण मानवीय जाति कराह उटी है। कदाचित ही, संसार का कोई कोना होगा जो इस महामारी के दंश से न छटपटा रहा हो। कोरोना महामारी और सर्व भूभागों में आजीविका की तलाश करते और मजदूरी के द्वारा उदर-भरण करने वालों की वेदना शब्दातीत है। सम्पूर्ण देश में कोरोना महामारी के कारण तालाबंदी ने हताहत किया है तो केवल मध्यम निम्नवर्गीय लोगों को। प्रवासी मजदूरों को फटेहाल स्थिति में अपने गाँव लौटना हृदय को मर्माहत और आंदोलित करता है। कोरोना काल में मजदूरों, दीनहीन दुखियों की पीड़ा का जो दर्द हम टी. व्ही. चैनलों पर देखते हैं वह सचमुच हृदयविदारक है। समसामयिक परिस्थितियाँ बाजारवाद, उपभोक्तावाद, भूमंडलीकरण और आधुनिकता की चुनौतियों के साथ सामने आयी हैं। जिसमें मानवीय संवेदनाएँ धूल-धूसरित होती दृष्टिगोचर हो रही हैं।

भारत गाँवों का देश है। स्वतंत्रता प्राप्ति के सात दशक के बाद भी भारतीय गाँव विकास के नाम पर उपेक्षित ही रहे हैं। भारतीय ग्रामीण जीवन में किसानों की व्यथा, नारी की दयनीय स्थिति दलितों की पीड़ा और आदिवासियों की वेदना ज्यों की त्यों हैं। तभी तो आज भी विकसनशील भारत में किसानों को आत्महत्या करनी पड़ती है। गाँव का युवक शहर में रोजगार के लिए पलायन कर रहे हैं, जिससे पारिवारिक रिश्ते में घुटन और टूटन परिलक्षित होता है। क्योंकि गाँव की अभावग्रस्त जिन्दगी जीना अब असह्य हो गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में डॉ. रामदरश मिश्र जी का `बीर बरस` ग्रामीण अनुभूतियों का जीता-जागता यथार्थवादी उपन्यास है। हिंदी साहित्य जगत में ग्रामीण जीवन का व्यथा-कथा पर सपाटबयानी अंदाज में लिखने वालों साहित्यकारों में डॉ. रामदरश मिश्र एक समर्थ रचनाकार के रूप में उल्लेखनीय रहे हैं। सन् 1996 में प्रकाशित ग्रामीण जीवन से ओत-प्रोत उपन्यास `बीस-बरस` गाँव के बदलते परिवेश का यथार्थ जीवन प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की यह विशेषता है कि यह पूर्ण रूप से गाँव की जमीन पर लिखा गया है। प्रस्तुत उपन्यास में मिश्र जी ने कथा नायक `पत्रकार दामोदर` के माध्यम से ग्रामीण जीवन के यथार्थ की पहचान से हमें अवगत कराया है। उपन्यास में समकालीन ग्राम्य जीवन अपने नए कलेवर विविध त्रासदियों का रंग भरती परिलक्षित होती है। ग्रामीण संस्कृति की सहज झलक उपन्यास को उत्तुंग तक पहुँचाती है। साहित्य और समाज में अन्योन्याश्रित संबंध है। कोई भी साहित्यकार समाज का आधार लेकर ही अपनी कल्पना की उड़ान भरता है, वह यहाँ दृष्टिगोचर होता है।

`बीस बरस` उपन्यास में उत्तर प्रदेश गोरखपूर देवरिया जिले के बसावनपुर गाँव का चित्रण किया गया है। दामोदर पढ़-लिखकर दिल्ली जैसे महानगर में पत्रकार बन गया है, किन्तु उसका मन गाँव में रमता है। जब वह एक लम्बे अंतराल `बीस बरस` के बाद अपने गाँव आता है तो उसे अपना गाँव परिवर्तित नजर आता है। दामोदर को बसावनपुर का पूरा क्षेत्र अपना ही लगता है। वह महसूस करता है - ``कहाँ गया वह कोन, हवा, पेड़, वह मिठौआ, वह लहसुनिया, वह....``[1] दामोदर अपने गाँव में आये बदलाव को महसूस करता है। जब वह गाँववालों से बात करता है तो उनमें पहले जैसा अपनापन का

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

December 2018
Issue-29, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

> विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
> नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
> वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले
>
> -महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

देवेन्द्री मन्द्रवाल अफ़शाँ की ग़ज़लों में यथार्थवादी चिंतन

डॉ पूनम त्रिवेदी

साहित्य समाज का दर्पण होता है । साथ ही, साहित्य समाज को नयी प्रेरणा, नये विचार व नयी दिशा भी प्रदान करता है । समाज का यथार्थ चित्रण करना ही किसी रचनाकार की रचनाधर्मिता का प्रमुख उदेश्य रहा है। हिंदी ग़ज़लकारों ने युगीन परिवेश के केन्द्र में रखकर समाज एवं राष्ट्र में व्याप्त पारिवारिक विघटन, पीढ़ियों की संवादहीनता, टूटती मान्यताएँ, क्षीण होते सामाजिक सरोकार, मूल्यहीनता, राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार और व्यभिचार, धर्म–विमुख होती धर्म निरपेक्षता, सामाजिक, आर्थिक अराजकता, आदि विविध रूपों में यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह 'आगाज़' में देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' ने अपने हदय की वेदना को प्रस्तुत किया है। समाज में व्याप्त अनाचार के विरूध्द बगावत करते हुए एक आदमी से लेकर पूरे समाज के दर्द को आत्मसात करने का भी प्रयास किया है। 'अफ्षाँ' आषावादी ग़ज़लकार है। इनका साहित्यिक सफर का 'आगाज़' निश्चय ही अपने अन्दर विचारों एवं संघर्ष का संदेश लेकर हमारे समाने आया है।

समसामायिक परिवेश में हिन्दी साहित्य की काव्य विधा के अन्तर्गत गज़ल की अपनी एक अलग पहचान है। ग़ज़लों में युग–बोध के साथ–साथ पाठकों से संवाद साधने की कला दृष्टिगत होती है। यही कारण है कि ग़ज़लों की लोकप्रियता जनमानस में रच–बस–सी गई है। वैसे तो हिन्दी ग़ज़ल–विधा का प्रारम्भ अमीर खुसरों से माना जाता है, किन्तु उन दिनों ग़ज़ल में श्रृंगार रस की प्रधनता रही। किन्तु काल परिवेश के अनुसार बदलता ग़ज़ल का स्वरूप आया आम आदमी की पीड़ा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गया है। ग़ज़लकार दुष्यंतकुमार की ग़ज़लें हिन्दी साहित्य जगत में मील का पत्थर साबित हुई। 21 वीं सदी की ग़ज़लों में अनेक ग़ज़लकारों का महनीय योगदान रहा है। चन्द्रसेन विराट, गोपालदास सक्सेना 'नीरज', डॉ. कुँवर बेचैन, जहिर कुरेशी, रामवतार त्यागी, षेरजंग गर्ग, बालस्वरूप राही, डॉ. गिरीराज शरण अग्रवाल, डॉ. रोहिताश्वर अस्थाना, अदम गोंडवी आदि का नाम आदर से लिया जाता है।

21वीं सदी की ग़ज़लकारों में महिला ग़ज़लकार देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' का ग़ज़ल संग्रह 'आग़ाज' सन 2004 में प्रकाशित हुई। जिसमें 33 ग़ज़लें तथा 12 नज़्मे हैं। प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह 'आग़ाज' में देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' ने अपनी ग़ज़लों में हदय की वेदना के साथ–साथ समाज, देश में व्याप्त विसंगतियों से भरे आम आदमी की पीड़ा, सामाजिक, धार्मिक बोध, मानवी मूल्यों का विघट्न, भयावह वातावरण, राजनीति भ्रष्टाचार, अन्याय अत्याचार, आदि विद्रूपताओं पर अपनी सशक्त लेखनी चलाई है। 'आग़ाज' ग़ज़ल संग्रह के आमुख में व्यष्टि से समष्टि की पीड़ा की ओर इंगित करती हुई स्वयं देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' लिखती है–

जिस भाक्स के पैरों में छाले होग/आँखों में लहू के आँसू होगें।
दानि□त से उसके एक बूँदें ले लो /आँचल में उसके कई समंदर होगे।

सम्प्रति भैतिक जगत में आये बदलाव ने जनमानस के अतंर जगत बदल डाला है। आज मनुष्य स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण संवेदना विहीन हो गया है।परोपकार निःस्वार्थ जैसे नैतिक मूल्य नष्ट हो गए है। समाज में व्याप्त इस चलन पर क्षोभ व्यक्त करते हुए ग़ज़लकार लिखती है–

रूसवाई से बचाना हो तो दिल की बातें आम न करना/इस दुनिया में सब हैं पराये, कोई अपना होता नहीं। 1

××××××

आइने को देखकर एहसास कुछ ऐसा होगा/देखते ही देखते हम पुराने हो गए। 2

आज सामान्य मेहनतकश निम्नमध्यवर्गीय मनुष्य अपनी सीमित आय में परिवार का भरण पोषण करता है। बढ़ती हुई मंहगाई और जरूरतों के बीख वह निरंतर पीसता जा रहा है। वर्तमान मनुष्य की इस नयी जीवन पध्दती के नये संघर्ष को अभिव्यंजित करती हुई 'अफ़शाँ' लिखती है–

साथ कैसे ले चलूँ तुम्हें मेरे दोस्त/बोझा मेरे कँधों पर हर रोज बढ़ रहा है। 3
पसिनेसे से रोटी जुटाते रहेगें।/कि 'अफ़□ाँ' भारू से ही खुददार हैं। 4

21वीं सदी तक हिन्दी ग़ज़ले मानवतावादी रथा सह अस्तित्ववादी मूल्यों की पक्षधर बन गई है। आधुनिक युग समस्याओं और संघर्ष का युग है। आज हम सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे है। विकास के नाम पर सिर्फ बयानबाजी हो रही है। वर्तमान स्थिति यह है कि रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, बेईमानी, साम्प्रदायिक दंगें फसाद आदि का सहारा लेकर राजनेता अपना उल्लू सीधा कर रहें हैं। आज समाज में अर्थ का बोलबाला है। संवेदना विहिन मानवता नफरत और घृणा की आग में झुलस रही है–

यह गाँव हमारा है तुफाँ से बचाना है/जैसी भी मुसीबत हो मिल जुल के उठानी हैं।
इस भाहरे परी□ाों में हर आग बुझाती है/नफ़रत की अदावत की हर आग बुझानी है। 5
हर कोई है बीमार इस रौनक चेहरों में/हर कोई है अनजान, जाने पहचाने में। 6

भारत लोकतंत्र राष्ट्र है। किन्तु इस लोकतंत्र में शासक कुर्सी पर बैठते ही वादों से मुकर जाता है और अपने स्वार्थ में अंधे होकर 'कुर्सी बचाओं' की नीति का अनुशरण करता है। शासन योजनाऍं तो बहूत बनाती है लेकिन अन योजनाओं का सफल निर्वाह नहीं करती। देंष में व्याप्त असंतोष को देखकर ग़ज़लकार लिखती है।

दिल्लगी छोड़ो अब काम की बातें करो, /कज़ा सर पर खड़ी है, अब जीने की बातें करों। 7
कसमें खाना सौच के प्यारे वादा करना खूब समझ के, /टूटे वादों का 'अफ़□ाँ ' वि□वास दो बारा होता नहीं। 8

गज़लकार 'अफ़शाँ ' की गज़ले सकारात्मक सोच से युक्त है। ये निराशा में डूबते व्यक्ति को हौसला दिलाती हुई उनमें सकारात्मक सोच भरने का प्रयत्न करती हुई दृष्टिगत होती हैं। आम आदमी की पीड़ा, निराशा और हताश जीवन में जीने की जिजीविषा पैदा करती हुई ये लिखती है–

हरगिज न अब जिएँगें, जिल्लद की जिन्दगी, /चाहेंगें हम हमे□ा इज्जत की जिन्दगी।
इंसानियत का हमको पैगाम आम करना, /देगें न अब किसी को नफरत की जिन्दगी । 9

आम आदमी का जीवन अश्रुमय होता है। सामाजिक आर्थिक शोषण को सहते हुए वह अन्दर ही अन्दर टूट जाता है। किन्तु सामान्य व्यवित के अन्दर छुपे अदम्य साहस का बयान 'अफ़शाँ ' की गज़लों में अभिव्यंजित हुआ है–

ये कैसी मुझो अमृत की प्यास है, /दिल है डूबता आँखों में आस हैं। 10
तारों तक जाते है हाथ हौसलों के दम पर, /तुम तक गए हो यारों, एक दिया जलाकर । 11

भारत धर्मनिरपेक्ष देश है। जहाँ धर्मों का समान अविष्कार और सम्मान है। किन्तु विषाक्त लोकतंत्र वोटों की राजनीति के कारण जाति, धर्म सम्प्रदाय के नाम पर लोगों में फूट डालने की नीति का परिचलन हो गया है। हम प्रायः एक दूसरे के धर्म का सम्मान न करते हुए आपसी वैमनस्य में साम्प्रदायिक दंगों के शिकार हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में संवेदनशील गज़लकार अपनी व्यथा लिखती है–

उल्फत के इस नगर में नफरत की कैसी खेती, /क्या राम पा सकोगे रावण करीब रखकर। 12

छोटा–सा इक बना था मुहब्बत का आ□ियाँ, /लेकिन जमाने वालों की नफरत से जल गया। 13

सम्प्रति धर्म का विकृत रूप समाज में पैठ गया है। धर्म का कुत्सित रूप आपसी भाईचारे को भूलकर एक विघ्यंसकारी आग की लपट बन चुकी है। धर्म के ठेकेदार धार्मिक लौ में रंग बदल रहे है और राजनीति छद्मकारों के प्रति आकोश की अभिव्यंजना इस प्रकार हुई है–

गाँव गली मे। भूख की खेती, भाहरों भाहरों आग है, /खलिहानों से संसद तक यह कैसा मौसम आया है।
नफरत के हो बाग लगाते, काँटों को परवाना चढ़ाते, /इसी आग में जलोगे हम भी, याद कभी यह आता है। 14

सम्प्रति असहिष्णुता के बढते माहौल में मंदिर मस्जिद के नाम पर नफ़रते बढ़ती जा रही है। धर्म के नाम पर रक्तपात व आतंकवाद जैसे कुस्तित विचारों के कारण समाज में खाईयाँ बढ़ती जा रही है। मानवता पर हो रहे कुठाराघात से व्यथित 'अफ़शाँ ' बयाँ करती है–

का□ी मै न काबा में, मंदिर में न मस्जिद में, /भगवान तो बसता है, मजफूम की आहों में।
नग्में तो मोहब्बत के कैसे मैं लिखू 'अफ़□ाँ ' /जलते हुए भाहरों के मँजर है निगाहों में । 15

इतना ही नहीं, धर्म का विकराल रूप कुछ इस तरह लोगों में जूनून बनकर इन्सान की इन्सानियत को खत्म कर रही है। निष्कर्षत : कहा जा सकता है कि देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' ने बड़ी व्यापकता और गहनता के साथ समाज, राष्ट्र में व्याप्त गरीबी, बेकारी, भूख, आम आदमी की पीड़ा, मानवीय मूल्यहीनता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, धोखाघड़ी, साम्प्रदायिकता, भय, आतंक, अलगाववाद आदि की अभिव्यक्ति गज़ल संग्रह 'आगाज' में किया है। गज़लकार ने यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर पाठकों के समक्ष सच्चाई के बखूबी से चित्रित किया है। उनकी गज़लों में समय एवं समाज का वृतांत है । 'अफशाँ' की गज़लें भावना और कल्पना की वायविक उडान नही है। उन्होंने देश में व्याप्त आर्थिक विषमता पूँजीपतियों के दवारा श्रमिकों के शोषण कें प्रति अपनी सशक्त लेखनी चलाई है। उनकी गज़लां में समकालीन यथार्थ है। जिसमें मानवीय जीवन की संवेदनाओं की खनक है। साथ ही समाजहित के लिए मानवतावाद, आशावाद तथा विश्वबंधुत्व की भावना दृष्टिगत होती है। 'अफ़शाँ' की गज़लें सामाजिक जनचेतना को जगाने का एक सफल प्रयास है।

संदर्भ 1 आगाज– गज़ल 2– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.13
1. आगाज– गज़ल 5– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.19
2. आगाज– गज़ल 5– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.30
3. आगाज– गज़ल 5– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.31
4. आगाज– गज़ल 9– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.27
5. आगाज– गज़ल 9– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.16
6. आगाज– गज़ल 9– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.12
7. आगाज– गज़ल 2– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.13
8. आगाज– गज़ल 2– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.45
9. आगाज– गज़ल 16– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.75
10. आगाज– गज़ल 33– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.66
11. आगाज– गज़ल 1– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.11
12. आगाज– गज़ल 7– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.17
13. आगाज– गज़ल 20– देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.49
14. आगाज– गज़ल 24 – देवेन्द्री मन्द्रवाल 'अफ़शाँ' पृ.57

हिंदी विभाग,
श्री संत गाडगे बाबा हिंदी महाविद्यालय
भुसावल, जिला. जलगाँव

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Gender Equality Attitude among College Students	**Dr. Shailaja Bhanghale**	05
2	Gender Sensitization : An Imperative Need of the Hour (A Study of Gender Sensitization Between The B.Ed. Students)	**Dr. Shashikala Magare**	08
3	Magda, A Victim of Gender Discrimination in J. M. Coetzee's "In the Heart of the Country"	**Mrs. Anjali Patil**	12
4	Prevention, Prohibition and Redressal of Sexual Harassment of Women at Workplace act 2013 during the Post-Liberalized Era: Analysis from Feminist Perspective	**Surendra Jadhav**	16
5	Spatial Distribution of Sex Ratio in Buldhana District	**Dr. Shilpa Patil**	23
6	Issues and challenges of Gender Sensitization	**Mrs. Pradnya Sathe**	27
7	Issues and Challenges of Gender Sensitization	**Ayesha Basit**	30
8	The Third Gender : Invisible Issues	**Dr. V. S. Patil & Dr. S. P. Zanke**	33
9	Gender Equity for Peace and Prosperity	**Madhuri Bhutada**	36
10	Gender Equality and Women Empowerment through ICT	**Dr. Anjali Kulkarni**	39
11	Graphology to Diagnose Stress among Girl Students	**Mrs. Jyotsna Palekar**	41
12	Gender Sensitization in Thomas Hardy's *'Tess of the D'Urbervilles'*	**Mr. Nilesh Guruchal**	48
13	Gender Sensitization through Literature and Media	**Dr. Smita Chaudhari**	52
14	कामाच्या ठिकाणी होणारा महिलांचा लैंगिक छळ : स्वरूप व तरतुदी	**डॉ. नाना लांडगे**	56
15	महिला संवेदिकरण आणि उच्च शिक्षण : विशेष संदर्भ खान्देश	**सौ.मनीषा चौधरी, प्रा. श्रीराम जोशी**	61
16	ताण व्यवस्थापन	**प्रा. छाया ठिगळे**	66
17	स्त्रीत्वाचे अभान- महिला सक्षमीकरणातील एक प्रमुख अडथळा	**डॉ. सोपान बोराटे**	69
18	स्त्रियांवरील कौटुंबिक अत्याचार व कायदे	**श्रीमती. रेखा देवकर**	72
19	शिक्षण आणि लिंग समभाव	**सतीश पारधी**	77
20	कार्यालयीन तणावाचे व्यवस्थापन	**प्रा. शुभांगी राठी**	80
21	स्त्री पुरुष समानतेविषयी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार	**प्रा. दिपाली पाटील**	86
22	लिंग-समभाव जाणीव काळाची गरज	**प्रा. नीता चोडिया**	90
23	संगीताद्वारे तणावमुक्ती : एक अभ्यास	**राजश्री देशमुख**	94
24	मराठी स्त्रीवादी साहित्याची तात्त्विकता आणि वाटचाल	**भारती सोनवणे, डॉ. धनराज धनगर**	98
25	महिला आणि ताण व्यवस्थापन	**सरिता आढाळे**	105
26	लिंगभेदीय पुसंवादी विमर्श	**डॉ.पूनम त्रिवेदी**	107
27	लैंगिक असमानता और महिला शिक्षा	**डॉ.सुधीर शर्मा**	111
28	लिंग आधारित संकल्पना और भारत : समस्या एवं निदान 'एक विहंगांवलोकन	**प्रा. अनुपम शर्मा**	114
29	सहज योग द्वारा तनाव मुक्ति	**डॉ. रूपाली चौधरी**	118
30	हिंदी उपन्यासो में अभिव्यक्त किन्नर विमर्श	**डॉ.गिरीश कोळी**	122

लिंगभेदीय पुसंवादी विमर्श

डॉ. पूनम त्रिवेदी
हिन्दी विभाग,
श्री संत गाडगेबाबा हिन्दी महाविद्यालय,
भुसावल जिला.जलगाँव (महाराष्ट्र)

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था और संसदीय प्रणाली के अंतर्गत स्त्री-पुरुप समान अधिकारों की घोषणा की गई । परिणाम स्वरूप स्त्री-शिक्षा के उत्तरोत्तर विकास के साथसाथ स्त्रियों के अधिकारों के प्रति सजगता - तथा उन अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले अनेक संगठनों का उदय हुआ । किंतु दुर्भाग्य आज भी हमारे देश में "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" जैसे अभियान के तहत स्त्री सुरक्षा व विकास को सुरक्षित रखने का प्रयास चिंतनीय है। इसका कारण क्या है ? इसका प्रमुख कारण –पुसंवादी विचारधारा का वर्चस्व।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था व वर्गीय व्यवस्था स्वभावत: पितृसत्तात्मक होती हैं। जहाँ शोषण, असमानता एवं लिंगभेदीय विषमताएँ आज भी अपना पग जमाए बैठी है । परिणाम स्वरुप लिंगभेदीय असमानता के मूल धरातल पर फलती-फूलती नारी अवधारणा आंदोलन के रूप में उभर कर सामने आई है और लिंगीय (जेंडर) भेदभाव का आंदोलन अब विश्वव्यापी बन चुका है । इन आंदोलनों के द्वारा प्रवुध्द स्त्रियाँ नारी के मानवी रूप को स्वीकारते हुए लिंगभेदीय पुसंवादी विचारधारा को खारिज करती हुई अपने अधिकारों की मांग करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं ।

लिंगभेदीय या पुसंवादी विमर्श के पूर्व हमें लिंग की अवधारणा से अवगत होना पड़ेगा । हिंदी साहित्य जगत में बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिंग आधारित साहित्य की परिकल्पना परिलक्षित होती है । जेंडर (लिंग) पदबंध का सबसे पहला उल्लेख साहित्य जगत आधार पर मिलता है । समाज विज्ञान में लिंग पर अध्ययन बाद में हुआ । लिंग पदबंध से दोनों लिंगों बोध होता है किंतु जेंडर के नाम पर लिखी गई जितनी भी पुस्तके आई उसमें स्त्री शब्द के पर्याय के रूप में इसका प्रयोग दिखाई देता है । संप्रति जेंडर (लिंग) स्त्री का पर्यायवाची शब्द बन चुका है । इस तरह सेक्स (काम), सेक्सुअल डिफरेंस (कामुक भिन्नता) और जेंडर (लिंग) इन प्रतिबंधों को स्त्रीत्व के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। .

अमूमस जेंडर पदबंध का प्रयोग प्रथमत: अर्थव्यंजना को स्पष्ट करती है कि लिंग एक नहीं है बल्कि यह दो है और उसमें फर्क होता है । व्दित्तीय यह भी ध्वनित होता है कि जेंडर सामाजिक संबंधों को व्यक्त करता है । तथा तृतीय यह भी अर्थ प्रकट होता है कि इसमें उभयलिंगी विरोध निहित है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात एक स्वस्थ समाज के निर्माण की बात की गई। जहाँ स्त्री-पुरुष समान अधिकार तथा शोषण मुक्त समाज की स्थापना प्रमुख ध्यैय रहा है । किंतु ऐसा हो न सका । शोषण और असमानता एवं लिंगभेदीय विषमताएँ ज्यों कि त्यों बनी रही । इस लिंगभेदीय असमानता की जड़े हमारे सामाजिक संबंधों में है जिसमें पितृसत्ताक दृष्टिकोण की भूमिका सर्वोपरि है। अतः पुसंवादी विचारधारा के पहलुओं को समझने के लिए लिंग विश्लेषण आवश्यक है।

लिंगभेदीय शोषण हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा है । जबकि लिंगभेदीय शोषण एवं वैषम्य की अनदेखी हमारी अधूरी मानवीय चेतना का परिणाम है । जिसके फलस्वरूप समाज में स्त्री विरोधी विचारधारा बलवती होती गई और पुरुषों में लिंगभेदीय वैषम्य के खिलाफ लड़ने की चेतना का अभाव उसकी पितृसत्तात्मक धारा का प्रभाव गहरा चला गया।

सर्वप्रथम हमें स्त्री की अवधारणा पर विचार करना होगा । पुसंवादी विचारोंको ने स्त्री को एक खास ढाँचे में देखने का प्रयास किया है । उन्होंने अस्मिता रहित स्त्री को गृहिणी के रूप में स्वीकार किया है। इसके

लिए मनुस्मृति, चाणक्य नीति, रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रंथों से स्त्री को एक खास संज्ञा से अभिहित कर उसे नारी होने के अनुभव और गरिमा से मंडित किया है। लिंगभेदवादी पुरुष विमर्श ने नारी की महत्ता, नारी धर्म, नारी के दायित्व संबंधी बातों पर समयसमय पर अपने विचार व्यक्त किए हैं- । साथ ही स्त्रियों को अपने अधिकारों को लेकर जागरूकता की बात करने से उनकी कटु भर्त्सना भी की गई है ।

लिंगभेदीय पुरुष विमर्श नारी विकास में बाधक है । लिंगभेदवादी चिंतन प्राचीन ग्रंथों में गढ़ी गई नारी का चित्रण कर आधी आबादी स्त्री की इमेज को स्त्री साबित करने के तरीके से इन्कार करता है और नारी अस्तित्व को पुरातन के दायरे में बँधा रखने को मजबूर करता है। इतना ही नहीं लिंगभेदवादी पुरुष विमर्श का हम विश्लेषण करते हैं तो यह बात सामने आती है कि उन चिंतकों ने अँपने मत की पुष्टि के लिए बारबार - उल्लिखित पुराण, उपनिषद एवं महाकाव्य आदि की व्याख्या करते हुए उस चौखट में नारी को बारबार देखने - का प्रयास किया है । किंतु आज की स्त्री को ना तो पौराणिक स्त्री बनाया जा सकता है और ना ही महाकाव्य नायिका के रूप में रुपायित करना संभव है। लिंगभेदवादी पुरुष विमर्श अपने विचारों की पुष्टि में इन्हीं संदर्भों का सहारा लेते हुए स्त्री अस्मिता को खत्म करने के अनेकों रणनीतिक कदम उठाए और नारी धर्म के बहाने पतिव्रत धर्म की महत्ता पर जोर दिया गया। योनिशुचिता को सर्वोपरि माना गया। इस संदर्भ में `कल्याण` पत्रिका का `नारी` अंक वर्ष में विशेष रूप से उल्लेखनीय है 1947 । इस अंक में संपादकीय माध्यम से स्त्री अधिकार का निषेध किया गया । संपादकीय में लिखा है-भारतीय आदर्श है कर्तव्यपालन और यूरोप का आदर्श है अधिकार प्राप्ति । कर्तव्यपालन में सबके अधिकार सुरक्षित रहते हैं और अधिकार को चुनौती में किसी का भी अधिकार सुरक्षित नहीं है क्योंकि अधिकार अंधा होता है वह अपना ही स्वार्थ देखता है उसे एक दूसरे के हित की जरा भी परवाह नहीं होती।``[1] साथी संपादकीय लेखन में स्त्रियों के संगठन बनाने के अधिकारों एवं मानवीय पहचान बनाने की सजगता की तीखी आलोचना की गई । अत: स्त्री आधुनिकीकरण, उनकी उपलब्धियों का अस्विकार स्त्री के लिए परम्परावादी मूल्य एवं मान्यताओं का समर्थन यही लिंगभेदीय पुसंवादी विमर्श का सारतत्व है। फलत: स्त्री सामाजिक जीवन में क्या करैं और क्या न करें यह भी पुरुष संदर्भ तय होता है।

लिंगभेदवादी पुरुष विमर्श की ` स्त्री स्वतंत्रता` को वासना पूर्ति की स्वतंत्रता के रूप में देखता है । वह ईश्वर को सर्वशक्तिमान पुरुष रुप मानता है । `कल्याण` के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार, शंकराचार्य ज्योतिर्पीठाधीश्वर, श्री ब्रह्मानंद सरस्वती, स्वामी रामानंद संप्रदायाचार्य, श्री जयदयालजी गोयंदका आदि अपने लेखों में `स्त्री` अस्तित्व की एक परिभाषा दी है। उनके अनुसार नारी शिक्षा उत्थान, विधवा विवाह, समाज-सुधार नारी जागरण एवं समान अधिकारों की बात नारी जीवन को पथ भ्रष्ट बनाती है । जिनके कारण पतनोन्मुख समाज का सर्जन होगा । साथ ही पुत्रों की तरह पुत्रियों को भी पिता की संपत्ति में कानूनी बंटवारा का विधान सर्वथा विनाशकारी सिद्ध होगा । इस बात की पुष्टि करते हुए की स्त्री अस्मिता पर बारबार प्रहार - किया गया है । श्री जयदयाल गोयंदका ने `कल्याण` पत्रिका के माध्यम से `भारतीय संस्कृति में नारी धर्म` स्त्रियों के लिए कर्तव्य शिक्षा आदि लेखों में लिंगभेदीय पुरुषवादी विमर्श से ओत-प्रोत भाव की अभिव्यंजना की है। गोयंदका ने लिखा है, "स्त्रियों की शिक्षा भी ऐसी होनी चाहिए, जो उनके जीवन का आदर्श के अनुकूल हो तथा जो उनके कर्तव्य पालन में सहायक सिद्ध हो । पुरुषों के आदर्श के अनुसार स्त्रियों के भी उन्हीं सब विषयों की शिक्षा देना उनके जीवन को बर्बाद करना उन्हें दतोभ्रष्ट-ततोभ्रष्ट करना है । वर्तमान शिक्षा पद्धति का उद्देश्य तो इस पद्धति को प्रचारित करने वाले पुरुषों के कथनानुसार भारतीय नवयुवकों को गुलाम बनाना, उसकी अपनी निज की संस्कृति , इतिहास, पूर्व पुरुषों एवं धर्म के प्रति अनास्था उत्पन्न करना उन्हें कहने मात्र को भारतीय किंतु ह्रदय से पाश्चात्य बना देना है । और इसी पद्धति के अनुसार अपनी कन्याओं को भी शिक्षित कर

हमने उनका ही नहीं, अपितु साथसाथ अपने तथा अपनी भा-वी संतान को भी सर्वनाश का वीज वो दिया, किंतु अब भी हम यदि चेत जाएँ तो अपने सर्वनाश को बचा सकते हैं।" 2 उनके अनुसार- "स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा नहीं देनी चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली स्त्रियों के लिए, उनकी संतानों के लिए विनाशकारी है। इतना ही नहीं उन्होंने स्त्री शिक्षा संबंधी मत व्यक्त करते हुए लिखा है- "हमें अपनी कन्याओं का शिक्षा क्रम ऐसा बनाना चाहिए जिससे वे आदर्श गृहिणी तथा सीता, सावित्री, अनुसया, मदालसा, मैत्रेय गार्गी के समान पतिव्रता बन सके। ....साधारण भाषा तथा साहित्य ज्ञान के साथसाथ- खीना-पिरोना, विविध पाक तैयार करना, बच्चों का लालन-पालन करना, स्वास्थ्य एवं सफाई के साधारण नियमों को जानना, देसी-चिकित्सा के प्रारंभिक सिद्धांतों को तथा घरेलू नुस्खों का ज्ञान प्राप्त करना, घायलों की सेवा करना, गृह प्रबंध, कृषि, गणित एवं अर्थशास्त्र का विक्तिर्म, शिल्प आदि कलाओं........... की शिक्षा दी जानी चाहिए। यह शिक्षा उन्हें यथा संभव घरों में ही दी जानी उचित है। पाठशालाओं में चरित्र संपन्न आदर्श अध्यापिका का प्राय अभाव होने से बालिकाओं के चरित्र पर बहुत अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता और वे प्राय: विलासप्रिय और शौकीन बन जाती है।" 3

लिंगभेदीय पुसंवादी लेखकों के विचारों से अवगत होने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि `स्त्री` गृहिणी या माता के रूप में अपना जीवन गुजार सकती है वरना समाज में उसका किसी अन्य क्षेत्र के लिए कोई स्थान नहीं है। पुरुष प्रधान संस्कृति ने नारी को केवल बच्चे पैदा करने वाली मशीन के रूप में देखा और जाना है। इसे `कल्याण` पत्रिका के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार ने `नारी के प्राकृतिक उत्तरदायित्व` के नाम से व्याख्यायित किया है। पुरुषों लेखकों की इस मानसिकता एवं संकुचित विचारधारा पर कुठारातघात करते हुए क्षमा शर्मा ने `मनुवादी तालिबानों का घोषणा पत्र` नामक लेख में लिखा है कि "पूरी पुस्तक में सर्वाधिक जोर स्त्रियों के पतिव्रता रहने और यौन शुचिता पर है और यह पतिव्रत या उसके पति के जिंदा रहने पर ही नहीं, मरने के बाद भी निभाना है। दूसरी बात स्त्री को महत्वपूर्ण बनाने के लिए यह है कि वह पुत्र को जन्म देती है इसलिए पति और उसके परिवार वालों के लिए जरूरी है। तीसरी बात है कि `कन्यादान` क्योंकि एक बार ही किया जाता जा सकता है इसलिए विधवा विवाह नहीं होने चाहिए। काश : लेखक ने विधवा आश्रम की दुर्दशा देखी होती। पुस्तक की मुख्य चिंता है कि कहीं स्त्रियां अपना धर्म पतिव्रता धर्म भूल रही है इसलिए बारबार - इसी धर्म को रेखांकित किया गया है। शायद ही कोई इस बात का जिक्र है कि माँ सिर्फ बेटे की ही नहीं, बेटी की भी होती है। यदि बेटी का जिक्र कहीं है तो इस तरह है कि पिता और भाई जिस भी खूंटे से उसे बाँध दे उसे जीवन भर उसी खूंटे से बाँध रहना है। यही उसका कर्तव्य है और यही उसका धर्म भी है।"4

अतः कहा जा सकता है कि आज के विकासशील युग में नारी का कार्यक्षेत्र घर-बाहर, समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीयस्तर पर क्रियाशील हो उठा है। अब इसे प्रताड़ना, लाछंना के बदले सम्मान, सहयोग और स्नेह से अंगीकार कर ही सुख शांति प्रिय समाज का निर्माण संभव होगा। आदिकाल, मध्यकाल तक स्त्री परख धारणाओं में `स्त्री` अस्तित्व को कई त्रासदों के बीच दौड़ लगाने को विवश किया गया है किंतु वर्तमान दशक की आधुनिकतावादी नारी चिंतन ने लिंगभेदीय पुंसवादी विमर्श को धराशायीकर दिया है। पितृसत्ता के अंतर्गत औरतों पर नियंत्रण रखने और उन्हें दबाने के लिए अनेक प्रकार की हिंसा का प्रयोग होता रहा है। उन सभी दायरो को तोड़ते हुए आज की नारी शिक्षित, स्वावलंबी और जागरूक हो रही है। वे धार्मिक आस्थाओं में भी बदलते वातावरण के कारण धर्म एवं आस्था को विज्ञान की कसौटी पर कसने लगी है।

भारतीय लोकतंत्र में संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकार के अंतर्गत समानता का अधिकार, प्राचीनतापंथी लिंगभेदीय पुंसवादी विमर्श को कतई स्वीकार नहीं है। वे आज भी नारी समानता, स्वतंत्रता ,

शिक्षा के कट्टर विरोधी है । किंतु स्त्री की मुक्ति में समाज की मुक्ति छिपा हुआ है । स्त्री एक सामाजिक निर्मिति है और प्रतिकूल सामाजिक परिस्थितियों को खत्म करने की जंग ही स्त्री की स्वतंत्र पहचान है। स्त्री समानता का संघर्ष सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक इन तीनों स्तरों पर एक साथ चलना चाहिए । तभी तेजी से लिंगभेद के खिलाफ संघर्ष में सफलता मिलेगी।

संदर्भ

1. कल्याण, वर्ष -1947, पृ. 15
2. कल्याण- भारतीय संस्कृति में नारी, वर्ष- 1947 पृ.68-69
3. कल्याण- भारतीय संस्कृति में नारी, वर्ष- 1947 पृ.68-69
4. क्षमा शर्मा- मनुवादी तालिवानों का घोपणापत्र- हंस फरवरी 1997
5. आधुनिकता के आईने में स्त्री संघर्ष, डॉ अहिल्या मिश्र
6. हिंदी साहित्य में स्त्री की छवि, सप्ताहिक हिंदुस्तान सितंबर 1989 मृदुला गर्ग

IMPACT FACTOR:4.197(IIJIF)
ISSN: 2454-5503

CHRONICLE
OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

VOL. 6 SPECIAL ISSUE 3 JUNE 2020

A Bimonthly Peer Reviewed International Journal

Special Issue On

Life, Culture and Education Today

(Book 3)

Chief Editor
Dr Kalyan Gangarde

Guest Editors
Prin. Dr V.D. Satpute
Prin. Dr V.S.Anigunte
Prin. Dr H.P.Kadam

Mahatma Gandhi Education and Welfare Society's
CENTRE FOR HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES, KALYAN (W)
www.mgsociety.in +91 8329000732 Email: chcskalyan@gmail.com

Special Issue on the Occasion of Two Day International Interdisciplinary International Virtual Conference on *Life, Culture and Education Today*, on 5-6 June 2020, jointly organised by Mahatma Gandhi Education & Welfare Society, Parbhani (M.S.),Late Ramesh Warpudkar ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani (M.S.), Shri Panditguru Pardikar College, Sirsala, Dist. Beed (M.S.) and Kala Mahavidyalaya, Nandurghat, Dist. Beed (M.S.)

Full Journal Title: Chronicle of Humanities & Cultural Studies(CHCS)
Print ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 4.197 (IIJIF)
Frequency: Bimonthly / **Language:** Multi language / **Journal**
Country/Territory: India
Publisher: Centre for Humanities & cultural Studies, A-102, Sanghavi Regency, Sahyadrinagar, Kalyan (W) (MS). Email: chcskalyan@gmail.com

Guest Editors Dr. V.D.Satpute, Dr. V.s.Anigunte and Dr. H.P.Kadam

Chief Editor :
Dr Kalyan Gangarde, Director, Centre for Humanities and Cultural Studies, Kalyan (W)
Executive Editor
Dr Grishma Khobragade, Asst. Prof., Birla College, Kalyan (W)
Co- editors
Dr. Sadhana Agrawal,Asst. Professor, Maharani Laxmibai Govt. College of Excellence, Gwalior (M.P.) India
Dr Pandurang Barkale, Asst. Professor, Dept of English, SNDT Women's University, Churchgate, Mumbai
Dr Bharat Gugane, Asst. Professor, Bhosala Military College, Nashik, Maharashtra
Dr Dashrath Kamble, Asst. Professor, S.B.College, Shahapur, Dist. Thane, Maharashtra
Dr Sachin Bhumbe, Asst. Professor, P. N. Doshi College, Ghatkopar, Mumbai

EDITORIAL ADVISORY BOARD
Aju Mukhopadhyay,
Dr R.T. Bedre,
Dr (Mrs.) Smita R. Nagori,
Dr Arvind Nawale
Dr Rajiv Kumar,
Dr Kailash Nimbalkar,
Tsai-ching Yeh
Dr B. N. Gaikwad,
Dr Simon Philip,
Dr Binu Anitha Josheph
Dr Ramkishan Bhise

Subscription Rates

Annual Membership (Individual)	₹ 1,800
Bi-annual Membership	₹ 3,500
Institutional Annual Membership	₹ 2,200
Institutional Bi-annual Membership	₹ 4,200
Annual Membership for Foreigners)	$150

Printed by Seema Gangarde, New Man Publication, Parbhani
Email: chcskalyan@gmail.com Mob. + 91 9730721393

DISCLAIMER: Academic facts, views and opinions published by authors in the Journal express solely the opinions of the respective authors. Authors are responsible for their content, citation of sources and the accuracy of their references. The editorial board or Editor in chief cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights.

CONTENTS

1. मुख्यधारा को राह दिखाती :आदिवासी संस्कृति / **आलोक सुमन दूबे / 05**
2. कोविड–19 के समय सोशल मीडिया की सामाजिक दूरी बनाने में भूमिका **अर्चना सेन / 11**
3. कोविड–19 के मद्देनजर सामाजिक, घरेलू और मानसिक संकट / **डॉ. भाग्यश्री जे. राजपूत / 15**
4. वैश्विक स्तर पर हिंदी के बढते कदम / **डॉ. जयंत बोबडे / 20**
5. कोविड-19 महामारी का एक सामान्य अध्ययन / **डॉ. सुनीता भायल / 29**
6. कोविड-19 वैश्विक महामारी-अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप पर प्रभाव भारतीय सन्दर्भ में / **डॉ श्रीमती कल्पना वैश्य / 34**
7. आदिवासी विमर्श / **डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव / 40**
8. दुष्यंतकुमार का गद्य साहित्य / **मधुबाला / डॉ तब्बसुम खान / 44**
9. मंजुल भगत के उपन्यासो मे स्त्री विमर्श /**प्रा.विद्या बाबूराव खाडे / 47**
10. पोष्ट बॉक्स नं. २०३ नालासोपारा उपन्यास में किन्नर विमर्श / **डॉ. बाळासाहेब पगारे / 51**
11. उपन्यासों में व्यक्त किन्नर विमर्श / **डॉ. पूनम त्रिवेदी / 54**
12. मध्य प्रदेश मे अनुसूचित जाति : एक राजनीतिक विमर्श /**सतीश माहौर / 63**
13. भूमंडलीकरण और बाजारवाद की चकाचौंध में स्त्री का यथार्थ / **डॉ. सिन्धु सुमन / 70**
14. भारत का तीर्थ स्थल अमरकंटक एक सांस्कृतिक अध्ययन / **निर्मला तिवारी / डॉ. रीता पांडेय / 78**
15. भारतीय लोकतंत्र और मीडिया / **डॉ.बालाजी आनंदा साबळे / 86**
16. ग्रामीण लोक साहित्य और जल देवता /**डा० मनोज शर्मा/ रीना /पूजा/ 92**
17. भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना का प्रभाव / **डॉ. नीता तिवारी / 99**
18. पंकज सुबीर की कहानियों में नारी विमर्श / **डीन्सि जॉर्ज / डॉ. शांती / 105**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.261
ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March-2019 Special Issue – 173

Gender Sensitization: An Imperative Need of the Hour

Guest Editor:
Dr. Mangala Sabdra
Principal,
Smt. P.K.Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal
Tal. Bhusawal, Dist. Jalgaon [M.S.] India

Executive Editor of the issue:
Dr. Shilpa C. Patil
Dr. Sopan Borate
Mr. Nilesh S. Guruchal
Dr. Girish S. Koli

Guest Editor:
Dr. Dhanraj Dhnagar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 173- Gender Sensitization: An Imperative Need of the Hour
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
March-2019

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Gender Equality Attitude among College Students	**Dr. Shailaja Bhanghale**	05
2	Gender Sensitization : An Imperative Need of the Hour (A Study of Gender Sensitization Between The B.Ed. Students)	**Dr. Shashikala Magare**	08
3	Magda, A Victim of Gender Discrimination in J. M. Coetzee's "In the Heart of the Country"	**Mrs. Anjali Patil**	12
4	Prevention, Prohibition and Redressal of Sexual Harassment of Women at Workplace act 2013 during the Post-Liberalized Era: Analysis from Feminist Perspective	**Surendra Jadhav**	16
5	Spatial Distribution of Sex Ratio in Buldhana District	**Dr. Shilpa Patil**	23
6	Issues and challenges of Gender Sensitization	**Mrs. Pradnya Sathe**	27
7	Issues and Challenges of Gender Sensitization	**Ayesha Basit**	30
8	The Third Gender : Invisible Issues	**Dr. V. S. Patil & Dr. S. P. Zanke**	33
9	Gender Equity for Peace and Prosperity	**Madhuri Bhutada**	36
10	Gender Equality and Women Empowerment through ICT	**Dr. Anjali Kulkarni**	39
11	Graphology to Diagnose Stress among Girl Students	**Mrs. Jyotsna Palekar**	41
12	Gender Sensitization in Thomas Hardy's *'Tess of the D'Urbervilles'*	**Mr. Nilesh Guruchal**	48
13	Gender Sensitization through Literature and Media	**Dr. Smita Chaudhari**	52
14	कामाच्या ठिकाणी होणारा महिलांचा लैंगिक छळ : स्वरूप व तरतुदी	**डॉ. नाना लांडगे**	56
15	महिला संवेदिकरण आणि उच्च शिक्षण : विशेष संदर्भ खान्देश	**सौ.मनीषा चौधरी, प्रा. श्रीराम जोशी**	61
16	ताण व्यवस्थापन	**प्रा. छाया ठिगळे**	66
17	स्त्रीत्वाचे अभान- महिला सक्षमीकरणातील एक प्रमुख अडथळा	**डॉ. सोपान बोराटे**	69
18	स्त्रियांवरील कौटुंबिक अत्याचार व कायदे	**श्रीमती. रेखा देवकर**	72
19	शिक्षण आणि लिंग समभाव	**सतीश पारधी**	77
20	कार्यालयीन तणावाचे व्यवस्थापन	**प्रा. शुभांगी राठी**	80
21	स्त्री पुरुष समानतेविषयी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार	**प्रा. दिपाली पाटील**	86
22	लिंग-समभाव जाणीव काळाची गरज	**प्रा. नीता चोडिया**	90
23	संगीताद्वारे तणावमुक्ती : एक अभ्यास	**राजश्री देशमुख**	94
24	मराठी स्त्रीवादी साहित्याची तात्त्विकता आणि वाटचाल	**भारती सोनवणे, डॉ. धनराज धनगर**	98
25	महिला आणि ताण व्यवस्थापन	**सरिता आढाळे**	105
26	लिंगभेदीय पुंसवादी विमर्श	**डॉ.पूनम त्रिवेदी**	107
27	लैंगिक असमानता और महिला शिक्षा	**डॉ.सुधीर शर्मा**	111
28	लिंग आधारित संकल्पना और भारत : समस्या एवं निदान 'एक विहंगावलोकन	**प्रा. अनुपम शर्मा**	114
29	सहज योग द्वारा तनाव मुक्ति	**डॉ. रूपाली चौधरी**	118
30	हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त किन्नर विमर्श	**डॉ.गिरीश कोळी**	122

लिंगभेदीय पुसंवादी विमर्श

डॉ. पूनम त्रिवेदी
हिन्दी विभाग,
श्री संत गाडगेवावा हिन्दी महाविद्यालय,
भुसावल जिला.जलगाँव (महाराष्ट्र)"

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था और संसदीय प्रणाली के अंतर्गत स्त्री-पुरुष समान अधिकारों की घोषणा की गई । परिणाम स्वरूप स्त्री-शिक्षा के उत्तरोत्तर विकास के साथसाथ स्त्रियों के अधिकारों के प्रति सजगता - तथा उन अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले अनेक संगठनों का उदय हुआ । किंतु दुर्भाग्य आज भी हमारे देश में "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" जैसे अभियान के तहत स्त्री सुरक्षा व विकास को सुरक्षित रखने का प्रयास चिंतनीय है। इसका कारण क्या है ? इसका प्रमुख कारण –पुसंवादी विचारधारा का वर्चस्व।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था व वर्गीय व्यवस्था स्वभावत: पितृसत्तात्मक होती हैं। जहाँ शोषण, असमानता एवं लिंगभेदीय विषमताएँ आज भी अपना पग जमाए बैठी है । परिणाम स्वरुप लिंगभेदीय असमानता के मूल धरातल पर फलती-फूलती नारी अवधारणा आंदोलन के रूप में उभर कर सामने आई है और लिंगीय (जेंडर) भेदभाव का आंदोलन अब विश्वव्यापी बन चुका है । इन आंदोलनों के द्वारा प्रबुध्द स्त्रियाँ नारी के मानवी रूप को स्वीकारते हुए लिंगभेदीय पुसंवादी विचारधारा को खारिज करती हुई अपने अधिकारों की मांग करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं ।

लिंगभेदीय या पुसंवादी विमर्श के पूर्व हमें लिंग की अवधारणा से अवगत होना पड़ेगा । हिंदी साहित्य जगत में बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिंग आधारित साहित्य की परिकल्पना परिलक्षित होती है । जेंडर (लिंग) पदवंध का सबसे पहला उल्लेख साहित्य जगत आधार पर मिलता है । समाज विज्ञान में लिंग पर अध्ययन बाद में हुआ । लिंग पदवंध से दोनों लिंगों बोध होता है किंतु जेंडर के नाम पर लिखी गई जितनी भी पुस्तके आई उसमें स्त्री शब्द के पर्याय के रूप में इसका प्रयोग दिखाई देता है । संप्रति जेंडर (लिंग) स्त्री का पर्यायवाची शब्द बन चुका है । इस तरह सेक्स (काम), सेक्सुअल डिफरेंस (कामुक भिन्नता) और जेंडर (लिंग) इन प्रतिवंधों को स्त्रीत्व के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। ·

अमूमस जेंडर पदबंध का प्रयोग प्रथमत: अर्थव्यंजना को स्पष्ट करती है कि लिंग एक नहीं है वल्कि यह दो है और उसमें फर्क होता है । व्दित्तीय यह भी ध्वनित होता है कि जेंडर सामाजिक संबंधों को व्यक्त करता है । तथा तृतीय यह भी अर्थ प्रकट होता है कि इसमें उभयलिंगी विरोध निहित है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात एक स्वस्थ समाज के निर्माण की बात की गई। जहाँ स्त्री-पुरुष समान अधिकार तथा शोषण मुक्त समाज की स्थापना प्रमुख ध्यैय रहा है । किंतु ऐसा हो न सका । शोषण और असमानता एवं लिंगभेदीय विषमताएँ ज्यों कि त्यों बनी रही । इस लिंगभेदीय असमानता की जड़े हमारे सामाजिक संबंधों में है जिसमें पितृसत्ताक दृष्टिकोण की भूमिका सर्वोपरि है। अतः पुसंवादी विचारधारा के पहलुओं को समझने के लिए लिंग विश्लेषण आवश्यक है।

लिंगभेदीय शोषण हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा है । जबकि लिंगभेदीय शोषण एवं वैषम्य की अनदेखी हमारी अधूरी मानवीय चेतना का परिणाम है । जिसके फलस्वरूप समाज में स्त्री विरोधी विचारधारा बलवती होती गई और पुरुषों में लिंगभेदीय वैषम्य के खिलाफ लड़ने की चेतना का अभाव उसकी पितृसत्तात्मक धारा का प्रभाव गहरा चला गया।

सर्वप्रथम हमें स्त्री की अवधारणा पर विचार करना होगा । पुसंवादी विचारोंको ने स्त्री को एक खास ढाँचे में देखने का प्रयास किया है । उन्होंने अस्मिता रहित स्त्री को गृहिणी के रूप में स्वीकार किया है। इसके

हमने उतना ही नहीं, अपितु साथसाथ अपने तथा अपनी भावी संतान को भी सर्वनाश का बीज बो दिया, किंतु अब भी हम यदि चेत जाएँ तो अपने सर्वनाश को बचा सकते हैं।" 2 उनके अनुसार- "स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा नहीं देनी चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली स्त्रियों के लिए, उनकी संतानों के लिए विनाशकारी है। इतना ही नहीं उन्होंने स्त्री शिक्षा संबंधी मत व्यक्त करते हुए लिखा है- "हमें अपनी कन्याओं का शिक्षा क्रम ऐसा बनाना चाहिए जिससे वे आदर्श गृहिणी तथा सीता, सावित्री, अनुसया, मदालसा, मैत्रेय गार्गी के समान पतिव्रता बन सके। ....साधारण भाषा तथा साहित्य ज्ञान के साथसाथ- सीना-पिरोना, विविध पाक तैयार करना, बच्चों का लालन-पालन करना, स्वास्थ्य एवं सफाई के साधारण नियमों को जानना, देसी-चिकित्सा के प्रारंभिक सिद्धांतों को तथा घरेलू नुस्खों का ज्ञान प्राप्त करना, घायलों की सेवा" करना, गृह प्रबंध, कृषि, गणित एवं अर्थशास्त्र का चित्रकर्म, शिल्प आदि कलाओं........... की शिक्षा दी जानी चाहिए। यह शिक्षा उन्हें यथा संभव घरों में ही दी जानी उचित है। पाठशालाओं में चरित्र संपन्न आदर्श अध्यापिका का प्राय अभाव होने से बालिकाओं के चरित्र पर बहुत अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता और वे प्राय: विलासप्रिय और शौकीन बन जाती है।" 3

लिंगभेदीय पुसंवादी लेखकों के विचारों से अवगत होने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'स्त्री' गृहिणी या माता के रूप में अपना जीवन गुजार सकती है वरना समाज में उसका किसी अन्य क्षेत्र के लिए कोई स्थान नहीं है। पुरुष प्रधान संस्कृति ने नारी को केवल बच्चे पैदा करने वाली मशीन के रूप में देखा और जाना है। इसे 'कल्याण' पत्रिका के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार ने 'नारी के प्राकृतिक उत्तरदायित्व' के नाम से व्याख्यायित किया है। पुरुषों लेखकों की इस मानसिकता एवं संकुचित विचारधारा पर कुठारातघात करते हुए क्षमा शर्मा ने 'मनुवादी तालिबानों का घोषणा पत्र' नामक लेख में लिखा है कि "पूरी पुस्तक में सर्वाधिक जोर स्त्रियों के पतिव्रता रहने और यौन शुचिता पर है और यह पतिव्रत या उसके पति के जिंदा रहने पर ही नहीं, मरने के बाद भी निभाना है। दूसरी बात स्त्री को महत्वपूर्ण बनाने के लिए यह है कि वह पुत्र को जन्म देती है इसलिए पति और उसके परिवार वालों के लिए जरूरी है। तीसरी बात है कि 'कन्यादान' क्योंकि एक बार ही किया जाता जा सकता है इसलिए विधवा विवाह नहीं होने चाहिए। काश : लेखक ने विधवा आश्रम की दुर्दशा देखी होती। पुस्तक की मुख्य चिंता है कि कहीं स्त्रियां अपना धर्म पतिव्रता धर्म भूल रही है इसलिए बारबार - इसी धर्म को रेखांकित किया गया है। शायद ही कोई इस बात का जिक्र है कि माँ सिर्फ बेटे की ही नहीं, बेटी की भी होती है। यदि बेटी का जिक्र कहीं है तो इस तरह है कि पिता और भाई जिस भी खूंटे से उसे बाँध दे उसे जीवन भर उसी खूंटे से बाँध रहना है। यही उसका कर्तव्य है और यही उसका धर्म भी है।"4

अतः कहा जा सकता है कि आज के विकासशील युग में नारी का कार्यक्षेत्र घर-बाहर, समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीयस्तर पर क्रियाशील हो उठा है। अब इसे प्रताड़ना, लाछंना के बदले सम्मान, सहयोग और स्नेह से अंगीकार कर ही सुख शांति प्रिय समाज का निर्माण संभव होगा। आदिकाल, मध्यकाल तक स्त्री परख धारणाओं में 'स्त्री' अस्तित्व को कई त्रासदों के बीच दौड़ लगाने को विवश किया गया है किंतु वर्तमान दशक की आधुनिकतावादी नारी चिंतन ने लिंगभेदीय पुंसवादी विमर्श को धराशायीकर दिया है। पितृसत्ता के अंतर्गत औरतों पर नियंत्रण रखने और उन्हें दबाने के लिए अनेक प्रकार की हिंसा का प्रयोग होता रहा है। उन सभी दायरो को तोड़ते हुए आज की नारी शिक्षित, स्वावलंबी और जागरूक हो रही है। वे धार्मिक आस्थाओं में भी बदलते वातावरण के कारण धर्म एवं आस्था को विज्ञान की कसौटी पर कसने लगी है।

भारतीय लोकतंत्र में संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकार के अंतर्गत समानता का अधिकार, प्राचीनतापंथी लिंगभेदीय पुंसवादी विमर्श को कतई स्वीकार नहीं है। वे आज भी नारी समानता, स्वतंत्रता ,

शिक्षा के कट्टर विरोधी है । किंतु स्त्री की मुक्ति में समाज की मुक्ति छिपा हुआ है । स्त्री एक सामाजिक निर्मिति है और प्रतिकूल सामाजिक परिस्थितियों को खत्म करने की जंग ही स्त्री की स्वतंत्र पहचान है। स्त्री समानता का संघर्ष सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक इन तीनों स्तरों पर एक साथ चलना चाहिए । तभी तेजी से लिंगभेद के खिलाफ संघर्ष में सफलता मिलेगी।

संदर्भ

1. कल्याण, वर्ष -1947, पृ. 15
2. कल्याण- भारतीय संस्कृति में नारी, वर्ष- 1947 पृ.68-69
3. कल्याण- भारतीय संस्कृति में नारी, वर्ष- 1947 पृ.68-69
4. क्षमा शर्मा- मनुवादी तालिबानों का घोषणापत्र- हंस फरवरी 1997
5. आधुनिकता के आईने में स्त्री संघर्ष, डॉ अहिल्या मिश्र
6. हिंदी साहित्य में स्त्री की छवि, सप्ताहिक हिंदुस्तान सितंबर 1989 मृदुला गर्ग

IMPACT FACTOR:4.197(IIJIF)
ISSN: 2454-5503

CHRONICLE
OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

VOL. 6 SPECIAL ISSUE 3 JUNE 2020

A Bimonthly Peer Reviewed International Journal

Special Issue On

Life, Culture and Education Today

(Book 3)

Chief Editor
Dr Kalyan Gangarde

Guest Editors
Prin. Dr V.D. Satpute
Prin. Dr V.S.Anigunte
Prin. Dr H.P.Kadam

Mahatma Gandhi Education and Welfare Society's
CENTRE FOR HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES, KALYAN (W)
www.mgsociety.in +91 8329000732 Email: chcskalyan@gmail.com

Special Issue on the Occasion of Two Day International Interdisciplinary International Virtual Conference on *Life, Culture and Education Today*, on 5-6 June 2020, jointly organised by Mahatma Gandhi Education & Welfare Society, Parbhani (M.S.),Late Ramesh Warpudkar ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani (M.S.), Shri Panditguru Pardikar College, Sirsala, Dist. Beed (M.S.) and Kala Mahavidyalaya, Nandurghat, Dist. Beed (M.S.)

Full Journal Title: Chronicle of Humanities & Cultural Studies(CHCS)
Print ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 4.197 (IIJIF)
Frequency: Bimonthly / **Language:** Multi language / **Journal Country/Territory:** India
Publisher: Centre for Humanities & cultural Studies, A-102, Sanghavi Regency, Sahyadrinagar, Kalyan (W) (MS). Email: chcskalyan@gmail.com

Guest Editors Dr. V.D.Satpute, Dr. V.s.Anigunte and Dr. H.P.Kadam

Chief Editor :
Dr Kalyan Gangarde, Director, Centre for Humanities and Cultural Studies, Kalyan (W)
Executive Editor
Dr Grishma Khobragade, Asst. Prof., Birla College, Kalyan (W)
Co- editors
Dr. Sadhana Agrawal,Asst. Professor, Maharani Laxmibai Govt. College of Excellence, Gwalior (M.P.) India
Dr Pandurang Barkale, Asst. Professor, Dept of English, SNDT Women's University, Churchgate, Mumbai
Dr Bharat Gugane, Asst. Professor, Bhosala Military College, Nashik, Maharashtra
Dr Dashrath Kamble, Asst. Professor, S.B.College, Shahapur, Dist. Thane, Maharashtra
Dr Sachin Bhumbe, Asst. Professor, P. N. Doshi College, Ghatkopar, Mumbai

EDITORIAL ADVISORY BOARD

Aju Mukhopadhyay,
Dr R.T. Bedre,
Dr (Mrs.) Smita R. Nagori,
Dr Arvind Nawale
Dr Rajiv Kumar,
Dr Kailash Nimbalkar,
Tsai-ching Yeh
Dr B. N. Gaikwad,
Dr Simon Philip,
Dr Binu Anitha Josheph
Dr Ramkishan Bhise

Subscription Rates

Annual Membership (Individual)	₹ 1,800
Bi-annual Membership	₹ 3,500
Institutional Annual Membership	₹ 2,200
Institutional Bi-annual Membership	₹ 4,200
Annual Membership for Foreigners)	$150

Printed by Seema Gangarde, New Man Publication, Parbhani
Email: chcskalyan@gmail.com Mob. + 91 9730721393

DISCLAIMER: Academic facts, views and opinions published by authors in the Journal express solely the opinions of the respective authors. Authors are responsible for their content, citation of sources and the accuracy of their references. The editorial board or Editor in chief cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights.

CONTENTS

1. मुख्यधारा को राह दिखाती :आदिवासी संस्कृति / **आलोक सुमन दूबे / 05**
2. कोविड–19 के समय सोशल मीडिया की सामाजिक दूरी बनाने में भूमिका **अर्चना सेन / 11**
3. कोविड–19 के मद्देनजर सामाजिक, घरेलू और मानसिक संकट / **डॉ. भाग्यश्री जे. राजपूत / 15**
4. वैश्विक स्तर पर हिंदी के बढते कदम / **डॉ. जयंत बोबडे / 20**
5. कोविड-19 महामारी का एक सामान्य अध्ययन / **डॉ. सुनीता भायल / 29**
6. कोविड-19 वैश्विक महामारी-अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप पर प्रभाव भारतीय सन्दर्भ में / **डॉ श्रीमती कल्पना वैश्य / 34**
7. आदिवासी विमर्श / **डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव / 40**
8. दुष्यंतकुमार का गद्य साहित्य / **मधुबाला / डॉ तब्बसुम खान / 44**
9. मंजुल भगत के उपन्यासो मे स्त्री विमर्श /**प्रा.विद्या बाबूराव खाडे / 47**
10. पोष्ट बॉक्स नं. २०३ नालासोपारा उपन्यास में किन्नर विमर्श / **डॉ. बाळासाहेब पगारे / 51**
11. उपन्यासों में व्यक्त किन्नर विमर्श / **डॉ. पूनम त्रिवेदी / 54**
12. मध्य प्रदेश मे अनुसूचित जाति : एक राजनीतिक विमर्श /**सतीश माहौर / 63**
13. भूमंडलीकरण और बाजारवाद की चकाचौंध में स्त्री का यथार्थ / **डॉ. सिन्धु सुमन / 70**
14. भारत का तीर्थ स्थल अमरकंटक एक सांस्कृतिक अध्ययन / **निर्मला तिवारी / डॉ. रीता पांडेय / 78**
15. भारतीय लोकतंत्र और मीडिया / **डॉ.बालाजी आनंदा साबळे / 86**
16. ग्रामीण लोक साहित्य और जल देवता **/डा० मनोज शर्मा/ रीना /पूजा/ 92**
17. भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना का प्रभाव / **डॉ. नीता तिवारी / 99**
18. पंकज सुबीर की कहानियों में नारी विमर्श / **डीन्सि जॉर्ज / डॉ. शांती / 105**

11.

उपन्यासों में व्यक्त किन्नर विमर्श

प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
हिंदी विभाग,
संत गाडगे बाबा हिंदी महाविद्यालय, भुसावल, जि. जलगाँव महाराष्ट्र

साहित्य समाज का प्राणतत्व होता है जो समय-समय पर उसे जागृत करता रहता है, उसका पथ प्रदर्शक बनता है। समकालीन साहित्य विविध विमर्शों का साहित्य रहा है। जिसमें नारी-विमर्श, आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श आदि केन्द्र में आ चुके हैं। किन्तु समाज द्वारा उपेक्षित किन्नर समुदाय आज भी उपेक्षित है। इन्हें कोई तृतीय पंथी, हिजड़ा, शिखण्डी, खोजा, क्लीव आदि की संज्ञा देते हैं। भारतीय समाज में यह सदैव हाशिए पर रहा है। 'हाशिया' शब्द का सीधा अर्थ है - जिसे किनारे ढ़केल दिया गया हो अथवा जिसे नजर अंदाज कर दिया गया हो। अर्थात् वह व्यक्ति या वर्ग अपनी विपन्नता के कारण सामाजिक दृष्टि से अत्यंत हीन कमजोर, कनिष्ठ के रूप में देखे जाने के नजरिये से समाज व्यवस्था के हाशिए पर होता है। उसे सामाजिक व्यवस्था में हमेशा पिसा कुचला जाता रहा है। समाज बहिष्कृत किन्नर समुदाय के संबंध में डॉ. पुनीत बिसरिया लिखते हैं - "हिंदी साहित्य और समाज की मानसिकता में अभी किन्नर विमर्श बेहद अपरिपक्व तथा पूर्वाग्रहपूर्ण अवस्था में है, समाज की वैचारिकी अभी इन्हें स्वीकार करने में हिचक रही है और फिर भी यह तो मानना ही होगा कि दिन-प्रतिदिन खुल रहे और विकसित हो रहे समाज ने अब इन्हें थोड़ा-सा सही स्पेस देना शुरू कर दिया है।" [१] वास्तव में आज भी यह समाज अपने अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है। किन्नर समुदाय अथवा व्यक्ति विशेष पर आधारित हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श उसके मानव-मात्र पहचान का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं साथ ही उनके जीवन की त्रासदी से समाज को रू-ब-रू कराने का सतत प्रयास है।

भारतीय समाज में पुरातन काल से लेकर अधुनातन तक किन्नर समुदाय के प्रति उपेक्षित, उपहासात्मक बर्ताव एवं इनकी दयनीय स्थिति

का अवलोकन यत्र-तत्र सर्वत्र दिखाई देता है। इतना ही नहीं, भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी समाज में व्याप्त तृतीय लिंगी समुदाय के प्रति अनदेखा व्यवहार रहा है। यही कारण है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात तथा इक्कीसवीं सदी में जितना समानता के समीकरण हमें स्त्री-पुरूषों के संबंधों के सकारात्मक बदलाव में दृष्टिगत होते है, वहीं इनका जीवन यातना, पीड़ा, आर्थिक विषमता से जुझता दिग्दर्शित होता है। इस संदर्भ में डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी लिखते हैं -"साहित्यकारों ने हिजड़ा समुदाय के दुःख-दर्द, अपमान, उपेक्षा शोषण और काल्पनिकता के संवेदना एवं करूणा के विशद पाट पर चित्रित कर उनकी व्यथा-कथा से पाठकों/समाज को परिचित ही नहीं कराया अपितु प्रतिरोध को वाणी भी दी। उन्हें उनकी अस्मिता से परिचित कराया और समाज में उनके जीने लायक सम्मान और अधिकार की बहाली का प्रश्न उठाया है।" [२]

१५ अप्रैल २०१४ को भारत की सर्वोच्च न्यायालय ने समाज के बीच स्त्री-पुरूष के भाँति जन्मे 'तीसरे लिंग' जिसे 'हिजड़ा' और ट्रान्सजेंडर कहा जाता हैं, उन्हें कानूनी मान्यता प्रदान कर मानवाधिकारों से परिचित करवाया है। सम्प्रति, सामाजिक व्यक्ति वर्षों से उपेक्षित समाज का अभिन्न अंग 'थर्ड जेन्डर' अथवा 'किन्नर' जीवन यापन करने वाले की दुःख वेदना से अब परिचित हो सके हैं। लगभग छः वर्षो के उपरांत इन किन्नर समुदाय की त्रासदी, इसकी मूक वेदना, अमानुषिक व्यवहार का चित्रण आज साहित्य में बेबाकी से चित्रित किया जा रहा है, ताकि भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग अपने 'स्व' के साथ अधिकारों को प्राप्त कर सके।

हिंदी साहित्य की औपन्यासिक विधा में लेखिका नीरजा माधव द्वारा लिखित 'यमदीप' किन्नर विमर्श का बहुचर्चित उपन्यास है। किन्नर समाज का अभिन्न अंग है। किन्तु समाज, परिवार की क्रूरता, उनकी स्वार्थपरता और उपेक्षा पाठक को अभिभूत करता है। साथ ही, मानवीय संवेदना को जगाता है। 'यमदीप' उपन्यास के प्रकाशकीय वक्तव्य में लिखा है - "हमारे समाज में घोर 'अभिशप्त' माने जाने वाले 'किन्नर' समुदाय के अंतरंग जीवन की मार्मिक गाथा प्रस्तुत करने वाला यह उपन्यास अपने-आप में अद्वितीय कृति है। यह उपन्यास लेखिका नीरजा माधव को एक ओर तो स्त्री लेखन एवं दलित लेखन की भीड़ से अलग करता है और दूसरी ओर नारी अस्मिता और शोषित-उपेक्षित वर्ग के

अनछुए पहलुओं को भी सामने रखता है, जिनकी ओर आज तक कोई सजग लेखनी उन्मुख ही नहीं हुई।'' १

'यमदीप' उपन्यास में नाजबीबी नामक पात्रा किन्नरों का प्रतिनिधित्व करती है। संपूर्ण उपन्यास का कथानक नाजबीबी हिजड़ा के जीवनचक्र के इर्द-गिर्द घुमता दिग्दर्शित होता है। प्रस्तुत उपन्यास लेखन के संबंध में स्वयं लेखिका नीरजा माधव ने लिखा है कि दरअसल इस उपन्यास का जन्म मेरी पुत्री कुहू के जन्म के साथ सन् १९९१ में हो गया था। जन्म का बधावा गाने आये हिजड़ों के समूह को प्रथम बार बहुत गहराई से देखा और महसूस किया। एक अव्यक्त छटपटाहट और वेदना से भर आई आँखे। आखिर इनका दोष क्या है? ये लोग अभिशप्त जिन्दगी जीने को मजबूर क्यों है? किन्नरों से संवाद साधकर, उनके जीवन को नजदीक से देखकर उपन्यासकार का हृदय आंदोलित हो उठता है और वह 'यमदीप' उपन्यास शीर्षक के माध्यम से समाज में उत्पन्न किन्नर/थर्ड जेन्डर कहा जाता है, उसकी मार्मिक अभिव्यंजना की है। उपन्यास कथा में मेजर साहब के घर में तीसरी संतान के रूप में जन्मी नंदरानी की कथा है। नंदरानी के पिता एक वीर सेनानी है, परन्तु तृतीय लिंगी बच्चे के जन्म पर वे फूटकर रो पड़ते हैं। उन्हें इस बात का डर है कि इस बच्चे के जन्म से कालांतर में उन्हें समाज से मात्र उपहास का कारण और लज्जित होना पड़ेगा। यही कारण है कि अपने ही शिशु के प्रति माता-पिता ट्रासफोबिया के शिकार हो जाते हैं और अपने ही कलेजे के टुकड़े को तृतीय लिंगी होने के कारण शोषण-उत्पीड़न की त्रासदी के जलते अंगारे में झोंक देते हैं। परिवार में माता-पिता, भाई-बहन के द्वारा बार-बार उपेक्षित व प्रताड़ित नंदरानी दमघोंटू वातावरण से बाहर निकलने के लिए स्वयं घर छोड़कर हिजड़ा जमात में शामिल हो जाती है। जहाँ नंदरानी से 'नाजबीबी' रूपी तृतीयपंथी का रूपांतरण बड़ा ही मर्मस्पर्शी है। 'यमदीप' उपन्यास में किन्नर नाजबीबी के जीवन संघर्ष की कथा-व्यथा उस मानवीयता की पहचान कराता है जो प्रायः आम आदमी के लिए बेमानी, अनपहचानी ही रह जाती है।

विवेच्य उपन्यास 'यमदीप' किन्नर जीवन की अदम्य जिजीविषा को दर्शाता है। उपन्यास के आरंभ में प्रसवपीड़ा से तड़पती पगली की मदद करती नाजबीबी का उज्ज्वल चरित्र जो मानवीय करूणा से भरी हुई है,

अनाथ पगली की बच्ची को पालने का दृढ़ संकल्प उसे इंसान से ऊपर देवता स्वरूप के दर्शन कराता है। समाज के द्वारा शोषित-उत्पीड़ित किन्नरों में मानवता के दर्शन होते है, जो प्रायः सर्वसाधारण इंसानों में इसका अभाव है। नाजबीबी कहती है - ‘‘मैं इसे मरने के लिए, चील कौओं और कुत्तों के नीचे जाने के लिए नहीं छोड़ सकती। मैं हिजड़ा हूँ, इंसान नहीं! जो मुँह फेर लूँ।’’ [४] उपन्यास में उपन्यासकार ने नाजबीबी के माध्यम से समाज के उन लोगों की तरफ इशारा किया है जो अपने ही कलेजे के टुकड़े को तृतीय लिंगी होने के कारण उसे समाज परिवार से बेदखल कर देते हैं।

विवेच्य उपन्यास में घर परिवार, शिक्षण संस्थान, जाति-धर्म के ठेकेदार, पुलिस, राजनेता आदि के अन्दर तृतीयलिंगी व्यक्ति के विषय में नगण्य नजरिया एवं उनकी वहशी कारनामों का चिट्ठा खोला है। यमदीप और तृतीयपंथी की साम्यता का अंकन उपन्यास की शीर्षक सार्थकता को सिध्द करता है। यमदीप को घूरे (कुड़े-कचरे) पर रख देने के बाद उधर मुड़कर भी नहीं देखा जाता है कि वह कब जलते-जलते बुझा और समाज में जन्मा तृतीयलिंगी बच्चा भी निर्वासित करने के बाद उसकी खोज खबर नहीं ली जाती कि वह जिंदा है या मर गया। जिस प्रकार दीपावली के पूर्व यमदीप काली रात के विरोध में अकेला जलाया जाता है, ठीक उसी प्रकार तृतीयलिंगी में जनमा शिशु ताउम्र शोषण उत्पीड़न की त्रासदीपूर्ण जीवन जीता रहता है।

‘गुलाम मण्डी’ किन्नर समाज की व्यथा-कथा को अभिव्यंजित करता बहुचर्चित उपन्यास है। उपन्यासकार निर्मला भुराडिया ने प्रस्तुत उपन्यास में किन्नरों के जीवन की त्रासदी को चित्रित किया है। हमारे समाज में किन्नरों को हिकारत और घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। किसी सभ्य परिवार में शादी हो या बच्चे का जन्म। लोग इन्हें खुद बुलाते हैं। उनका नाच-गाना करना तथा आशीर्वाद देना शुभ मानते हैं। लेकिन अकस्मात कहीं रास्ते में मिल जाये तो उनसे मुँह मोड़ लेते हैं। उपन्यास लेखिका ने सुधी पाठकों के समक्ष अनेकों प्रश्नों की झड़ी लगाते हुए समाज द्वारा उत्तर प्राप्त करना चाहती हैं। क्या तृतीयलिंगी सभ्य समाज का हिस्सा नहीं है? क्या इस तरह जन्म लेना पाप है? या इस तरह जन्म लेना उनके हाथों में था? समाज की विडम्बना पर चोट करती हुई उपन्यास पात्रा अंगुरी कल्याणी से कहती है -‘पैर छुओं और अच्छा-सा

आशीर्वाद अपने नाम कर लो। हिजड़ा गुरू का आशीर्वाद बहुत फलता है, वह भी सौ साल की गुरू। कई लोग आकर पैर छूकर जाते हैं इनके।'' ५ इस प्रकार किन्नरों के आशीर्वाद के लिए शादी-ब्याह, जन्म उत्सव पर लम्बी कतारें लगती हैं लेकिन बाद में इनकी उपेक्षा की जाती है। उपन्यास पात्रा अंगूरी, कल्याणी के संवाद के माध्यम से पक्षी कौआ और किन्नर का साम्यता को उद्घाटित करती हैं। हिन्दू धर्म की मान्यता है कि श्राध्द के दिनों में कौओं को खीर पूड़ी खिलाने से पूर्वजों की मृत आत्मा को शांति मिलती हैं। लेकिन श्राध्द-दिवस के उपरांत कौआ समाज में एक उपेक्षित पक्षी जिसे लोग पालते नहीं बल्कि कॉव-कॉव की आवाज पर उसे उड़ा देते हैं, उसे बहिष्कृत कर देते हैं। कौआ और किन्नर की साम्यता दर्शाते हुए उपन्यास पात्रा हमीदा सभ्य समाज के स्वार्थीपन पर करारा व्यंग्य करती हुई कहती है - "श्राध्द के दिनों में ही न स्वास्थ रहता है न तुम्हारा। आड़े दिन में जो कहीं कव्वा आकर बैठ जाये न तुम पर, तो नहाओगी-धोओगी, अपशगुन मनाओगी जैसे हम न तुम्हारे जो शादी-ब्याह हो तो नाचेंगी-गायेंगी, शगुन पायेंगी, मगर यूँ रास्ते में आ पड़ी न हम, तो हिजड़ा कहकर धिक्कारेगी।'' ६

आलोच्य उपन्यास 'गुलाम मण्डी' में किन्नर जीवन की आद्योपांत व्यथा का चित्रण किया है। किन्नर समाज में एक प्रथा हैं कि शव को चप्पलों से पिटा जाता है कि फिर वह अगले जनम में हिजड़ा न बने। उनका ऐसा करने के पीछे मात्र यही कारण होता है कि इस जीवन को जिस त्रासदी के साथ जिया, भोगा वह उसे अगले जनम में ना मिले। इतना ही नहीं रमीला को तृतीयलिंगी के कारण स्कूल-प्रवेश से निषेध, राजा (रानी किन्नर) को प्रेमी मनोज के द्वारा गुप्तांग कटवाकर चमेली कोठी वाली को बेचना, किन्नरों को रोजगार की समस्या का चित्रण एक सभ्य समाज की मानसिकता का परिचायक है। प्रस्तुत उपन्यास 'गुलाम मण्डी' में अंगूरी, कल्याणी के माध्यम से किन्नर समाज की दयनीय स्थिति का यथावत अंकन हुआ है। साथ ही हमीदा, रमीला, रानी किन्नरों के आपसी संवाद उनके प्रताड़ित, अपमानित, घृणास्पद और तिरस्कृत जीवन की व्यथा-कथा है।

महेन्द्र भीष्म द्वारा लिखित उपन्यास 'किन्नर कथा' किन्नरों के जन्म से लेकर संपूर्ण जीवन जीते जी उपेक्षा और उपहास का गरल पीने को बाध्य और नियति की मार समझ शारीरिक और मानसिक विकृतियों का

दंश झेलते परिलक्षित होते हैं। परिवार में तृतीय लिंगी उत्पन्न होना खानदान कलंकित होना माना जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार लिखते हैं -''फिर एक हिजड़ा बच्चे का प्राण बचाकर वह क्या सिध्द करना चाहता है? क्या कहेगा समाज? थुकेंगे लोग उसपर, हँसेंगे उसके वंश पर की यह एक हिजड़ा पैदा किया है, ठाकुर जगतसिंह बुंदेला ने, वीर बुंदेला खानदान में हिजड़े का जन्म, एक बहुत बड़ी गाली है, सरेआम तमाचा, नहीं-नहीं, उसने जो निर्णय लिया है, वह सही है, शेष बातें निरर्थक बकवास है। संतान कैसे भी हो, उसमें कैसे भी शारीरिक, मानसिक कमी क्यों न हो, माता-पिता को अपनी संतान हर हाल में भली लगती है, प्यारी होती है, फिर भले ही संतान हिजड़ा ही क्यों न हो। फिर भी सामाजिक परिस्थितियों, खानदान की इज्जत, मर्यादा, झूठी शान के सामने अपने हिजड़े बच्चे से उसके जन्मदाता हर हाल में छुटकारा पाना चाहते हैं।'' ७

'पोस्ट बॉक्स नं २०३ नाला सोपारा' किन्नर जीवन पर आधारित पत्रात्मक शैली में लिखा गया एक ऐसा उपन्यास है, जिसमें सुप्रसिध्द उपन्यासकार चित्रा मुद्‌गल ने किन्नरों को मनुष्य होने की स्वीकृति के लिए चुनौती और साहस की मांग को दर्शाया है। साथ ही यह कथा किन्नरों के संदर्भ में अपनी सामाजिकता का एक नया संस्करण है जो सुधी पाठकों को मर्माहत करने के साथ उन पर विचार करने को बाध्य करता है। उपन्यासकार चित्रा जी ने विनोद जो जन्मजात किन्नर है, वह यातनाएँ भी सहता है किन्तु शिक्षा प्राप्त करने में पीछे नहीं रहता। कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त कर वह एक विधायक के यहाँ नौकरी करता है। साहब की गाड़ी धोता है किन्तु किन्नरों की परम्परागत पेशे में नहीं आता। ''कोशिश में हूँ ना, उनसे छिपकर कोई बड़ा काम सीख सकूँ ताकि किसी भी रूप में उसपर निर्भर न रहूँ। कहीं और भाग सकता नहीं।'' ८

आलोच्य उपन्यास में विनोद का पत्र 'बा' को अपनी तिरस्कृत जिंदगी का एहसास कराते हैं वो हृदय विदारक है। विनोद 'बा' को पत्र में लिखता है - ''जिस नरक में तुने और पप्पा ने धकेला है मुझे, वह एक अंधा कुआँ है जिसमें सिर्फ साँप बिच्छू रहते है। साँप बिच्छू बनकर वह पैदा नहीं हुए होंगे। बस, इस कुएँ ने उन्हें आदमी नहीं रहने दिया।'' ९ इस प्रकार विनोद एक सशक्त किन्नर जीवन जीने वाला पात्र है जो

था, परंतु जैसे ही पिता को उसके हिजड़ेपन की जानकारी मिली, उन्होंने परिवार को आदेश दिया कि उसे लड़के के वेश में रखा जाए। पिता ने स्कूल में भी उसका नाम 'पायलसिंह' लिखवाया। हिजड़ा होने के कारण सभी उससे दूरी बनाकर रखते थे। पिता का व्यवहार तो उसके प्रति बिल्कुल ही रूक्ष था। उपन्यासकार ने पायलसिंह के शब्दों में किन्नर विवशता को व्यक्त करते हुए लिखा है -''मुझे हमेशा पिताजी की निगाहों से दूर ही रखा जाता। उनके गाँव में रहने तक मुझे जुगनू बनकर रहना होता था। लड़कों के कपड़े में। मेरे लिए ये दिन बड़े ही असहनीय दर्दभरे होते। सबसे ज्यादा मुझे मार पड़ती थी। मैं पिताजी को फूटी आँखों नहीं सुहाती थी।''[१२] अत: स्पष्ट है कि पायलसिंह जैसे किन्नरों को परिवार जहाँ वह जन्म लेता है तथा समाज जहाँ वह जीने का प्रयास करता है, वहाँ हमेशा उसे उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। इतना ही नहीं नारी हिजड़ा होने के कारण सभ्य समाज में ढोंगी, समाज में धर्म के ठेकेदार तथा रक्षक भी भक्षक बनकर उनका यौन-शोषण करता हुआ परिलक्षित होता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि सदियों से वंचित तिरस्कृत किन्नर समाज का आज भी उन्मुक्त गगन में साँस नहीं ले पा रहा है। तृतीयलिंगी समाज के लिए आज भी अनेक शब्दों का प्रयोग हीन अर्थ में किया जाता है। उसे दीन-हीन समझा जाता है। 'हिजड़ा' एवं 'छक्का' शब्द तो उपहासात्मक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। किन्नरों के संदर्भ में डॉ. मधु खराटे लिखते हैं -''साहित्य, समाज सापेक्ष एवं सामाजिक प्रतिबध्दता के उद्देश्य से परिपूर्ण होता है। समाज में पुरूष एवं स्त्री के अलावा एक तीसरा व्यक्ति भी होता है, जो न तो नर होता है, न मादा बल्कि अलिंगी होता है। इसे परिष्कृत शब्दावली में 'किन्नर' कहा जाता है। हिंदी में इसके लिए शिखण्डी, क्लीव, खोजा, हिजड़ा, छक्का, मौसी आदि नाम प्रचलित है। 'हिजड़ा' यह शब्द किसी मर्द के लिए अपमानजनक लगता है, उसे ऐसा लगता है मानो पिघला शीशा कानों में डाल दिया हो और हिजड़े को हिजड़ा गाली नहीं लगती, बल्कि उसके अन्तर्मन में एक कचोट सी होती है।''[१३] किन्नर, समाज का अभिन्न अंग है, परन्तु इस अंग को अपने ही परिवार, समाज वाले क्रूर, अमानवीय व्यवहार क्यों करते हैं? हिंदी साहित्य में इस विमर्श पर खुलकर चर्चा करने की आवश्यकता है। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण

है और दर्पण झूठ नहीं बोलता। परन्तु जब से भारत की सर्वोच्च न्यायालय ने एक युगांतकारी निर्णय लिया है, किन्नरों को 'थर्डजेन्डर' के रूप में कानूनी मान्यता प्राप्त हुई है। तब से, किन्नरों के प्रति समाज के सोच में सकारात्मक बदलाव आया है। सम्प्रति, घर से लेकर बाहर तक, शिक्षा क्षेत्र से लेकर राजनीति तक की मात्रा किन्नरों के अदम्य जीवन जीने की जिजीविषा को दर्शाता है।

संदर्भ सूची :-

१. भारतीय साहित्य और समाज में तृतीय लिंगी विमर्श : संपा. विजेन्द्र प्रतापसिंह, रविकुमार गोंड, पृ. ७१
२. थर्ड जेंडर - कथा आलोचना : संपा. डॉ. एमत्र फिरोज खान, पृ. १०६
३. यमदीप - नीरजा माधव, प्रकाशकीय वक्तव्य, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, २००८
४. पूर्ववत् - पृ. १२
५. गुलाम मण्डी - निर्मला भुराडिया, सामायिक पेपरबैक्स, नई दिल्ली, २०१४, पृ. १४
६. पूर्ववत् - पृ. १२
७. किन्नर कथा - महेन्द्र भीष्म; सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, २०१६, पृ. ४५
८. पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नालासोपारा - चित्रा मुद्गल, पृ. २६
९. पूर्ववत् - पृ. ५०
१०. तीसरी ताली - प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, २०११, पृ. ४३
११. पूर्ववत् - पृ. १३४
१२. मैं पायल.... - महेन्द्र भीष्म, अमन प्रकाशन, कानपुर, २०१६, पृ. ३१
१३. हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श - डॉ. मधु खराटे, प्राक्कथन से, विद्या प्रकाशन, कानपुर, २०१८

□□□

अपने जीवन में हार नहीं मानता और विरासत में मिले जीवन को यातनाओं के रूप में स्वीकार न करते हुए उससे मुक्ति का मार्ग ढूँढने में कामयाब होता परिलक्षित है। किन्नरों के जीवन पर आधारित यह उपन्यास एक सफल दस्तावेज है।

उपन्यासकार प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित 'तीसरी ताली' किन्नर विमर्श का यथार्थवादी उपन्यास है। उपन्यास में डिम्पल, राजा उर्फ रानी और मंजू की जीवन कथा को आधार बनाकर हिजड़ो, समलैंगिकों, लेस्बियनों का सटीक चित्रण किया है। संपूर्ण उपन्यास का केन्द्रबिंदु किन्नर समाज ही है। किन्नरों का जीवन, रीति-रिवाज, बोलचाल की भाषा और उनकी शवयात्रा तथा वार्षिक सम्मेलन के माध्यम से अकेलापन, कुंठा, रिश्तों की तलाश की अभिलाषा आदि को रेखांकित किया है। अपने परिवार, समाज और रिश्तेदारों द्वारा उपेक्षित किन्नर समाज में अकेलेपन को दूर करते रिश्तों की तलाश दिग्दर्शित होता है। "असल में हिजड़ों को अगर खुशी मिलती है तो वो किसी से रिश्ता बनाने में। अतीत के उनके सभी रिश्ते टूट जाते हैं, शायद इसलिए।" [१०] तृतीयलिंगी होने के कारण समाज व परिवार इन्हें अपनाता नहीं है। इनका अपना एक सम्मेलन होता है जहाँ एक-दूसरे का परिचय और वही पर इनके रिश्ते बनते हैं। वडोदरा से आयी आशा के माध्यम से इनका दुःख व्यक्त हुआ है - "हमारे कोई बेटे-बेटी तो हैं नहीं कि उनकी शादी होगी, तो सब इक्कठा होगें। हमारे तो ये सम्मेलन ही हैं, जहाँ हमारे सारे अरमान पूरे हो जाते हैं। सम्मेलन में हम माँ, बहन, बेटी जैसे सभी रिश्ते आपस में बना लेते हैं।" [११] प्रस्तुत उपन्यास में किन्नरों की विविध समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

उपन्यासकार महेन्द्र भीष्म द्वारा लिखित 'मैं पायल....' उपन्यास किन्नरों के व्यथा-कथा पर आधारित है। उपन्यास का नायक 'पायलसिंह' अपने माता-पिता की पाँचवी संतान के रूप में पैदा हुई। पायल के पिता को यह बात ज्ञात हुई कि वह हिजड़ा है, तब वह पायल के साथ अधिक बेरहमी का बर्ताव करना शुरू कर देते है। जन्म देने वाली माँ तथा भाई-बहनें समाज की आलोचना से बचने हेतु बाल्यावस्था में पायल के हिजड़ेपन को छुपाती है। पायलसिंह जन्मतः लड़की है। जब तक उसके शारीरिक परिवर्तनों का पता परिवारवालों का पता नहीं होता, तब तक उसे लड़की के रूप में रखा जाता है। बचपन में उसका नाम 'जुगनी'